कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 18 से 24 अगस्त 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-13 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

कृषक दूत के सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं, लेखकों, प्रतिनिधियों एवं शुभचिंतकों को 80वें स्वतंत्रता दिवस की

हार्दिक शुभकामनाएं

- कृषक दूत परिवार

पौध संरक्षण विशेषांक

दो जीवन, एक वादा.
सुरक्षित एक साथ.
LIC's न्यू जीवन साथी
लिमिटेड प्रीमियम
यूआईएन: 512N394V01 प्लान नं 889
नॉन-पार, नॉन-लिंक्ड, जीवन, व्यक्तिगत, बचत योजना
• एक ही पालिसी में आपके और आपके जीवन साथी के लिए संयुक्त जीवन सुरक्षा
• प्रीमियम भुगतान की सीमित अवधि
• भुगतान किए गए कुल वार्षिक प्रीमियम पर 7% गारंटीड एडिशन्स
• मौजूदा पॉलिसीधारकों और दिवंगत पॉलिसीधारकों के नामितों/लाभार्थियों के लिए रिबेट
• ऋण सुविधा उपलब्ध
ऑनलाइन भी उपलब्ध
अधिक जानकारी के लिए अपने एजेंट/नजदीकी एलआईसी शाखा से संपर्क करें या www.licindia.in पर जाएं
LIC India Forever
IRDAI Regn No.: 512
हमारा वॉट्सएप नं. 8976862090
कहिए 'Hi'
पोखेधड़ी वाले फोन कॉल्स तथा झूठे/भ्रामक प्रस्तावों से सावधान रहें.
LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
मध्य क्षेत्र भोपाल
हर पल आपके साथ

VAL
स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन पर्व की हार्दिक शुभकामनायें
JANANI
DELTA PRO
JIIUAN GOLD
SEA GOLD
GROW - HIGH
AVANI NUTRIN
विनुथना एग्रोटेक एल.एल.पी
डोर नं.: 1-90/28/C/5, प्लॉट नं.: 5 और 10, तीसरी मंज़िल, 83, माधापुर, हैदराबाद, तेलंगाना - 500081.
अधिक जानकारी के लिए इसे स्कैन करें
www.vnuthna.com

कृषि छात्रों को अब सीधे बैंक खाते में मिलेगी स्कॉलरशिप

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने लॉन्च किया नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि छात्रों के लिए छात्रवृत्ति और फेलोशिप की राशि जारी की। यह राशि राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल के माध्यम से प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के जरिए सीधे छात्रों के बैंक खातों में भेजी गई। इस योजना के तहत देशभर के 6,000 से अधिक कृषि छात्रों को कुल 21.35 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति और फेलोशिप राशि दी गई। नई व्यवस्था के तहत कृषि छात्रों को अब हर महीने छात्रवृत्ति की राशि सीधे उनके बैंक खातों में मिलेगी।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री चौहान ने कहा कि छात्रवृत्ति केवल आर्थिक मदद नहीं है, बल्कि यह कृषि शिक्षा को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने कहा कि सीधे बैंक खाते में राशि पहुंचने से छात्रों को समय पर सहायता मिलेगी और पुरानी व्यवस्था में होने वाली देरी दूर होगी। उन्होंने छात्रों से कहा कि कृषि की पढ़ाई केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। अच्छे किसान, कृषि वैज्ञानिक और कृषि उद्यमी तैयार करने के लिए खेत और प्रयोगशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण भी जरूरी है।

श्री चौहान ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिकों के अनुसंधान और किसानों की मेहनत से देश के खाद्यान्न भंडार को मजबूत करने में मदद मिली है। उन्होंने कृषि शिक्षा को नई तकनीक, व्यावहारिक प्रशिक्षण और कृषि क्षेत्र की जरूरतों से जोड़ने पर भी जोर दिया। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट, परिषद के सचिव ज्ञानेंद्र त्रिपाठी, उप महानिदेशक डॉ. यशपाल सिंह मलिक और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. सी. श्रीनिवास राव सहित अन्य अधिकारी और वैज्ञानिक मौजूद रहे।

पौध संरक्षण विशेषांक में पढ़िये...

शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
● सोयाबीन को कीटों से बचायें	05
● सोयाबीन में कीट रोग प्रबंधन	06
● सफेद लट की रोकथाम	07
● धान की कीटों से सुरक्षा	08
● फाल आर्मी वर्म से मक्का की सुरक्षा	09
● अरहर में कीट रोग प्रबंधन	10
● तिल की सुरक्षा	11
● वर्षाकालीन सब्जियों को रोगों से बचाएं	12

नए कपास सीजन में रिकॉर्ड स्टॉक की उम्मीद

नई दिल्ली। देश में आगामी कपास सीजन 2026-27 की शुरुआत रिकॉर्ड शुरुआती स्टॉक के साथ होने की संभावना है। कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया के ताजा अनुमान के अनुसार 1 अक्टूबर 2026 से शुरू होने वाले नए सीजन में कपास का शुरुआती स्टॉक 93.59 लाख गांठ रहने का अनुमान है। यह 2025-26 सीजन के अनुमानित 55.59 लाख गांठ के मुकाबले करीब 68 प्रतिशत अधिक है। एक कपास गांठ का वजन लगभग 170 किलोग्राम माना जाता है।

सीआईए के अनुसार सितंबर 2026 में समाप्त होने वाले मौजूदा कपास सीजन 2025-26 में क्लोजिंग स्टॉक 93.59 लाख गांठ रहने का अनुमान है। पिछले सीजन की तुलना में इसमें करीब 38 लाख गांठ की वृद्धि हो सकती है। इससे नए सीजन की शुरुआत घरेलू बाजार में कपास की पर्याप्त उपलब्धता के साथ होने की उम्मीद है। सीआईए ने 2025-26 सीजन के लिए देश में कपास उत्पादन का अनुमान भी बढ़ाया है। पहले अनुमानित 337 लाख गांठ के मुकाबले अब उत्पादन 339 लाख गांठ रहने का अनुमान जताया गया है। पिछले महीने भी उत्पादन अनुमान में तीन लाख गांठ की वृद्धि की गई थी। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में कपास की प्रेसिंग के अनुमान में सुधार को उत्पादन अनुमान बढ़ाने की प्रमुख वजह बताया गया है। इन राज्यों से प्राप्त आंकड़ों में सुधार के बाद सीआईए ने देश के कुल उत्पादन का अनुमान संशोधित किया है।

त्रिपुरा के सरसों शहद की दुबई में दस्तक

अगरतला। त्रिपुरा के मधुमक्खी पालकों और किसानों के लिए बड़ी उपलब्धि सामने आई है। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) ने त्रिपुरा के डेरगांग किसान उत्पादक संगठन द्वारा 1 मीट्रिक टन सरसों के शहद का पहली बार दुबई निर्यात सुगम बनाया है। इस उपलब्धि से राज्य के शहद और मधुमक्खी पालन क्षेत्र को अंतर्राष्ट्रीय बाजार से जोड़ने की नई संभावनाएं बनी हैं।

यह त्रिपुरा से सरसों के शहद की पहली अंतर्राष्ट्रीय खेप है। इससे स्थानीय मधुमक्खी पालकों और किसानों को संगठित एवं निर्यात-उन्मुख उत्पादन के माध्यम से वैश्विक बाजार तक पहुंच बनाने का अवसर मिलेगा। निर्यात के जरिए किसानों को स्थानीय बाजार की तुलना में बेहतर मूल्य मिलने की उम्मीद है। साथ ही, गुणवत्ता आधारित शहद उत्पादन और बेहतर पैकेजिंग एवं प्रसंस्करण को भी बढ़ावा मिलने की संभावना है। त्रिपुरा के कृषि मंत्री रतन लाल नाथ ने निर्यात को राज्य के मधुमक्खी पालकों और किसानों के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि स्थानीय कृषि उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाने से किसानों के लिए बेहतर आय के अवसर पैदा होंगे। इस अवसर पर कृषि एवं बागवानी सचिव अपूर्व रॉय, आईएफओएएम ऑर्गेनिक्स एशिया की कार्यकारी निदेशक जेनिफर चांग, एपीईडीए के वरिष्ठ अधिकारी, निर्यातक के प्रतिनिधि, लॉजिस्टिक्स साझेदार और क्षेत्र के प्रगतिशील मधुमक्खी पालक मौजूद रहे।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 20/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

सरकारी योजना के लिए जमीन गई तो किसानों को मिलेगा चार गुना मुआवजा: डॉ. यादव

खेती और किसान के हितों की रक्षा के लिए सरकार प्रतिबद्ध

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश सरकार खेती और किसानों के हितों की रक्षा के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। शासकीय योजनाओं और विकास कार्यों के लिए यदि किसानों की कृषि भूमि का अधिग्रहण किया जाता है, तो उन्हें एक-दो नहीं बल्कि चार गुना मुआवजा दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने किसानों से अपनी जमीन सुरक्षित रखने की अपील करते हुए कहा कि भूमि हमारी माता है और यही हमारे उदर-पोषण का आधार है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव भोपाल की करोंद कृषि उपज मंडी परिसर में आयोजित बलराम कृषि महोत्सव में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए। उन्होंने कहा कि किसानों के खेत सरकार के लिए देवस्थल के समान हैं और किसान का एक-एक दाना हमारे लिए प्रसाद है। किसानों के पसीने की हर बूंद का सम्मान करना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी जिलों में बलराम कृषि महोत्सव आयोजित किए जा रहे हैं। पिछले 26 दिनों में यह प्रदेश का 14वां महोत्सव है। जल्द ही भोपाल मुख्यालय में भी बड़े स्तर पर कृषि महोत्सव आयोजित किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने महोत्सव में मौजूद किसानों से संवाद करते हुए उन्हें पूरे उत्साह के साथ सहभागी बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश दलहन उत्पादन में देश में पहले, अन्न उत्पादन में दूसरे, तिलहन में दूसरे और दुग्ध उत्पादन में तीसरे स्थान पर है। जैविक खेती और जैविक कपास उत्पादन में भी मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार किसानों की आय के साधन बढ़ाने, खेती की लागत कम करने तथा तकनीक एवं नवाचार के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने पर विशेष जोर दे रही है। प्रदेश में सिंचाई क्षमता को 100 लाख हेक्टेयर, उद्यानिकी का रकबा 30 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाने और 10 हजार नई सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है।

सीहोर में बनेगा नेशनल सोयाबीन रिसर्च इंस्टीट्यूट का केंद्र

जनेकृविवि जबलपुर को 795 करोड़ की वित्तीय स्वीकृति

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रालय में आयोजित मंत्रि-परिषद की बैठक में किसानों, कृषि अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। मंत्रि-परिषद ने किसान कल्याण वर्ष के अंतर्गत सोयाबीन किसानों को बड़ी सौगात देते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत संचालित नेशनल सोयाबीन रिसर्च इंस्टीट्यूट के लिए सीहोर जिले की इछावर तहसील के ग्राम भाऊखेड़ी में 20 हेक्टेयर भूमि स्थायी पट्टे पर आवंटित करने का निर्णय लिया।

मंत्रि-परिषद के निर्णय के अनुसार, प्रस्तावित भूमि का उपयोग कृषि विज्ञान केंद्र की स्थापना के लिए किया जाएगा। आईसीएआर के अधीन राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान देश के लगभग 50 लाख सोयाबीन किसानों के हितों से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। इस केंद्र की स्थापना से मध्यप्रदेश में सोयाबीन अनुसंधान, उन्नत तकनीकों के प्रसार तथा किसानों की उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण मदद मिलने की उम्मीद है। बैठक में कृषि शिक्षा को मजबूती देने के लिए जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के निरंतर संचालन हेतु भी बड़ा निर्णय लिया गया। मंत्रि-परिषद ने वित्तीय वर्ष 2026-27 से 2030-31 तक विश्वविद्यालय के संचालन के लिए 795 करोड़ 59 लाख रुपये की ब्लॉक ग्रांट स्वीकृत की। वर्तमान में विश्वविद्यालय के अधीन 11 कृषि महाविद्यालय और 8 अनुसंधान केंद्र संचालित हैं, जहां कृषि शिक्षा, अनुसंधान और कृषि विस्तार संबंधी गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। स्वीकृत राशि से विश्वविद्यालय के अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों तथा लगभग 500 पेंशनरों के वेतन, भत्ते, मानदेय और पेंशन संबंधी वित्तीय दायित्वों के साथ-साथ प्रशासनिक एवं अन्य आवश्यक व्ययों का निर्वहन किया जाएगा।

कृषि आधारित उद्योगों और खाद्य प्रसंस्करण पर जोर

एमपी एग्रो की 52वीं वार्षिक साधारण सभा संपन्न

भोपाल। एम.पी. स्टेट एग्रो इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड की 52वीं वार्षिक साधारण सभा भोपाल स्थित पंचानन भवन के सभागार में उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री नारायण सिंह कुशवाह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में एमपी एग्रो के प्रबंध संचालक अरविंद कुमार दुबे, संचालक मंडल के सदस्य तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। श्री कुशवाह ने निगम की गतिविधियों को अधिक प्रभावी बनाने और किसानों, कृषि उद्यमियों तथा खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र से जुड़े लोगों को बेहतर सुविधायें उपलब्ध कराने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि एमपी एग्रो को प्रदेश में कृषि आधारित उद्योगों, आधुनिक तकनीक और खाद्य प्रसंस्करण गतिविधियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इससे किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य दिलाने के साथ कृषि क्षेत्र में रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर भी विकसित किए जा सकेंगे। वार्षिक साधारण सभा में वित्तीय वर्ष 2020-21 के लेखों को अंगीकृत किए जाने सहित विभिन्न प्रस्तावों पर चर्चा और विचार-विमर्श किया गया। बैठक में निगम के संचालकों का प्रतिवेदन, 31 मार्च 2021 को समाप्त वित्तीय वर्ष की एकीकृत एवं समेकित बैलेंस शीट तथा लाभ-हानि खाते प्रस्तुत किए गए। इसके अलावा सांविधिक अंकेक्षकों की रिपोर्ट, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की टिप्पणियों तथा निगम द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरणों पर भी चर्चा की गई। श्री कुशवाह ने एमपी एग्रो की गतिविधियों को किसानों और कृषि उद्यमियों की जरूरतों से जोड़ते हुए नवाचार एवं प्रसंस्करण आधारित गतिविधियों को गति देने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए उत्पादन के साथ-साथ प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और विपणन पर भी विशेष ध्यान देना जरूरी है।

प्रदेश में साढ़े तीन लाख मीट्रिक टन मूंग की खरीदी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश में मूंग की खरीदी कार्य की समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मूंग खरीदी कार्य में कोई अनियमितता नहीं होना चाहिए। मंत्रालय में आयोजित बैठक में जानकारी दी गई कि प्रदेश में करीब साढ़े तीन लाख मीट्रिक टन मूंग की खरीदी की जा चुकी है। डॉ. यादव ने कहा कि खरीदी के जुड़े कार्यों में गड़बड़ी करने वालों पर सख्त एक्शन लिया जाए। खरीदी कार्य में दोषी सिद्ध व्यक्तियों को ब्लेक लिस्टेड करते हुए सख्त कार्यवाही की जाए। बैठक में जानकारी दी गई कि भारत सरकार से 4 लाख 54 लाख टन मूंग खरीदी का लक्ष्य प्राप्त हुआ है, जिसके मुकाबले प्रदेश में खरीदी कार्य प्रगति पर है। प्रदेश के तीन लाख 47 हजार किसानों द्वारा पंजीयन करवाया गया था। इनमें से 3.42 लाख किसानों का सत्यापन सम्पन्न हुआ। बैठक से कृषि मंत्री एंदल सिंह कंषाना भी वर्चुअली जुड़े। मुख्य सचिव अशोक बर्णवाल और अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

94 प्रतिशत खरीफ फसलों की बुवाई पूरी

धान को छोड़कर अन्य फसलों की बुवाई पूर्णता की ओर

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। प्रदेश में पिछले सप्ताह हुई अच्छी बारिश से खरीफ फसलों की बुवाई में तेजी आयी है। 10 अगस्त तक प्रदेश भर में 94 प्रतिशत बुवाई पूरी हो गई है। धान की बुवाई 82.8 प्रतिशत हुई है जबकि अन्य फसलों की बुवाई लगभग पूरी हो गई है।

कृषि संचालनालय, भोपाल से प्राप्त जानकारी अनुसार अब तक 141.39 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलें बोयी गयी है। गत वर्ष समान अवधि में यह बुवाई 141.89 लाख हेक्टेयर में हुई थी। चालू खरीफ में 150.45 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बुवाई का लक्ष्य रखा गया है। समान अवधि में गत वर्ष की तुलना में 97.6 प्रतिशत बुवाई हुई है। धान की बुवाई 32.82 लाख हेक्टेयर में की गई है जो समान अवधि में पिछले साल की बुवाई 34.46 लाख हेक्टेयर से कम है। धान उत्पादक क्षेत्रों में पिछले हफ्ते अच्छी बारिश से धान की रोपाई में तेजी आयी है। सोयाबीन की बुवाई 52.45 लाख हेक्टेयर में की गई है। जो पिछले साल की बुवाई 53.77 लाख हेक्टेयर से काफी पीछे है। मक्का की बुवाई 20.40 लाख हेक्टेयर में हुई है जो समान अवधि में पिछले साल की बुवाई 26.20 लाख हेक्टेयर से कम है। उड़द की बुवाई 7.07 लाख हेक्टेयर में हुई है। पिछले साल यह बुवाई 5.92 लाख हेक्टेयर में हुई थी।

खरीफ की अन्य फसलों में ज्वार 67 हजार हेक्टेयर, मूंग 66 हजार हेक्टेयर, बाजरा 3.28 लाख हेक्टेयर, कोदो-कुटकी 1.27 लाख हेक्टेयर, तुअर 2.51 लाख हेक्टेयर, मूंगफली 5.87 लाख हेक्टेयर, तिल 2.42 लाख हेक्टेयर एवं कपास 5.82 लाख हेक्टेयर में बोयी गई है। खरीफ फसलों की वर्तमान स्थिति संतोषजनक है। कहीं-कहीं पर कीट-रोगों का प्रकोप दिख रहा है। किसानों को समुचित प्रबंधन की सलाह दी जा रही है।

प्रमुख खरीफ फसलों की बुवाई

फसल	सा. क्षेत्र 2026	बोनी लक्ष्य 26	समान अवधि में बोनी	बुवाई 2026
धान	38.09	39.63	34.46	32.82
ज्वार	1.01	0.85	1.00	0.67
मक्का	15.77	27.53	26.20	26.40
बाजरा	3.51	3.81	2.85	3.28
कोदो	1.11	1.57	1.50	1.27
तुअर	1.83	2.17	3.24	2.51
उड़द	10.56	5.31	5.92	7.07
मूंग	0.51	0.79	0.94	0.66
सोयाबीन	60.18	54.09	53.77	52.45
मूंगफली	4.46	6.17	4.02	5.87
तिल	3.02	2.44	2.19	2.42
रामतिल	0.11	0.36	0.08	0.15
कपास	5.82	5.72	5.71	5.82
कुल योग	145.98	150.45	141.89	141.39

(क्षेत्र- लाख हेक्टेयर में)

- **डॉ. पी.एल. अम्बुलकर**
  वरिष्ठ वैज्ञानिक, पौध संरक्षण (कीट शास्त्र)
- **श्वेता मसराम**
  वरिष्ठ तकनीकी सहायक
- **अवधेश कुमार पटेल**
  वरिष्ठ तकनीकी सहायक
  कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)

सोयाबीन को कीटों से बचायें

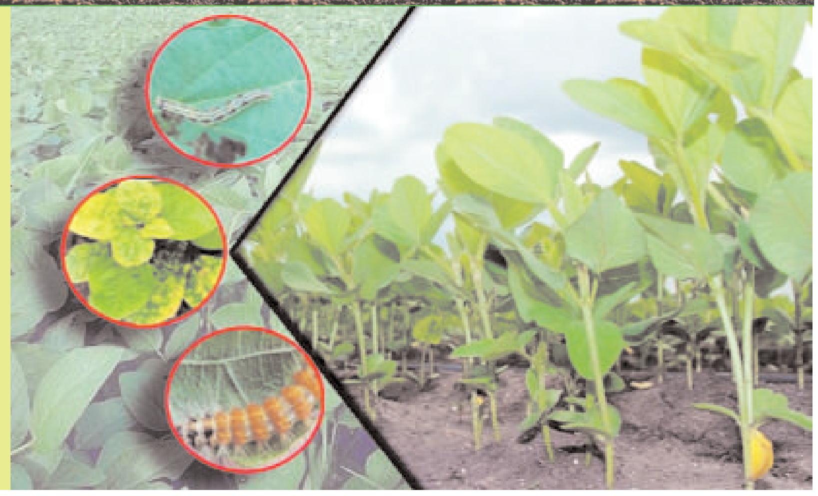

सोयाबीन, जिसे ग्लाइसिन मैक्स भी कहा जाता है, पूर्वी एशिया का एक फलीदार पौधा है, जिसके बीजों का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जाता है। यह प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा का एक उत्कृष्ट स्रोत है। सोयाबीन को गोल्डन बीन्स के रूप में भी जाना जाता है और यह लैग्यूम परिवार का सदस्य है। सोयाबीन एक बहुमुखी फसल है जो न केवल पोषण प्रदान करती है, बल्कि आर्थिक रूप से भी महत्वपूर्ण है परंतु इसके उत्पादन को कीट व्याधियां प्रभावित करते हैं।

सोयाबीन के प्रमुख कीट एवं प्रबंधन

गर्डल बीटल

क्षति: इस कीट की ग्रब अवस्था हानिकारक होती है। इसका वयस्क भी पत्तियों को खुरचकर हानि करता है। मादा वयस्क द्वारा अण्ड निरोपण हेतु मुख्य तने पर समानांतर चक्र या गर्डल बनाये जाने पर उस स्थान से ऊपर का भाग सूखकर मुरझा जाता है। बाद की अवस्थाओं में पौधे को जमीन से लगभग 15 से 25 सेमी ऊपर से काट दिया जाता है।

प्रबंधन

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- मानसून आने पर बुवाई करें।
- अनुशंसित मात्रा में बीज (80-100 किग्रा. प्रति हे.) का उपयोग करें।
- अंतरवर्ती फसल के रुप में मक्का या ज्वार लगायें।
- फसल चक्र अपनायें।
- अधिक नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का उपयोग न करें।
- पौधे के क्षग्रिस्त भागों एवं अण्डों के समूह को एकत्रकर नष्ट करें।
- गर्डल बीटल की आबादी पर नजर रखने और उसे कम करने के लिए संक्रमित पौधों के हिस्सों को कम से कम 10 दिनों में एक बार हटा दें और उन्हें खाद के गड्ढे में दबा दें।
- रासायनिक नियंत्रण हेतु क्लोरएन्ट्रा-निलीप्रोल 18.5 एस.ई. 150 मिली. या थायोमिथाक्जाम 12.6%+ लेम्डासायलोथ्रील 9.5% 125- 130 मिली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

सोयाबीन तना मक्खी

क्षति: इस कीट की इल्ली (मेगट) अवस्था ही हानिकारक होती है। नवविकसित मेगट पत्तियों के डंठलों से तने के अंदर घुसती है और टेढ़ी- मेढ़ी सुरंग बनाती है। ग्रसित पौधों में पत्तियों का ऊपरी भाग सूख जाता है। कीट का प्रकोप आंतरिक होने से प्रारंभिक आक्रमण का पता नही लगता हैं, परंतु इन पौधों के तनों पर एक छोटा सा छिद्र दिखाई देता है।

प्रबंधन

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें
- मानसून पूर्व बुवाई न करें।
- अनुशंसित मात्रा मे बीज का उपयोग करे एवं उचित दूरी पर बुवाई करें।
- रासायनिक प्रबंधन हेतु क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 एस.ई. 150 मिली. या थायोमिथाक्जाम 12.6%+ लेम्डासायलोथ्रील 9.5%125-130 मिली. प्रति हेक्टेयर छिड़काव कर या थायोमिथाक्जाम 25 डब्लयू जी. 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

सेमीलूपर

क्षति: पत्तियों का पूरी तरह क्षतिग्रस्त और पौधा सफेद हो जाता है। लार्वा पत्ती की कलियों, फूलों, कोमल फलियों और विकसित हो रहे बीजों को खाते हैं। फटी हुई और अनियमित फलियां। (यह फली छेदक द्वारा होने वाले नुकसान की विशेषता, साफ और गोल छेद के विपरीत है।)

प्रबंधन

- निष्क्रिय प्यूपा को समाप्त करने के लिए 2-3 वर्षों में गहरी ग्रीष्मकालीन जुताई करें।
- शीघ्र बुवाई, कम अवधि वाली किस्में।
- पौधों के बीच कम दूरी रखने से बचें।
- जैविक पक्षी बसेरा के रूप में उपयोग हेतु तुलनात्मक फसल के रूप में लंबी ज्वार उगाएं।
- जहां तक संभव हो लार्वा और वयस्कों को इकट्ठा करें और नष्ट करें।
- प्रत्येक कीट के लिए 50 मीटर की दूरी पर 5 जाल प्रति हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें।
- 50/हेक्टेयर की दर से पक्षी बसेरा स्थापित करें।
- पतंगों की आबादी को नष्ट करने के लिए प्रकाश जाल (1 प्रकाश जाल/5 एकड़) की स्थापना।
- नियंत्रण के लिए ट्राइकोग्रामा क्लियोनिस को साप्ताहिक अंतराल पर 1.5 लाख/ हेक्टेयर/ सप्ताह की दर से चार बार छोड़ा जाता है।
- हरे लेसविंग, शिकारी बदबूदार कीड़े, मकड़ी, चींटियों का संरक्षण करें ।
- फूल आने की अवस्था से शुरू होकर 10-15 दिनों के अंतराल पर तीन बार 0.1% टीपोल और 0.5% गुड़ के साथ 250 लीटर/हेक्टेयर एनपीवी का प्रयोग करें।

(नोट- कीटनाशक प्रति हेक्टेयर एनपीवी का छिड़काव तब करें जब लार्वा प्रारंभिक अवस्था में हों)।

- एनएसकेई 5% का दो बार छिड़काव करें।
- प्रभावित भाग होने पर रासायनिक नियंत्रण हेतु क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल18.5 एस.ई. 150 मिली./हेक्टेयर।

हेयरी केटरपीलर

क्षति: प्रारंभिक अवस्था में लार्वा ज्यादातर पत्तियों की निचली सतह पर क्लोरोफिल पर झुंड में आक्रमण करते हैं, जिसके कारण पत्तियां भूरे-पीले रंग की दिखती हैं। बाद की अवस्थाओं में लार्वा पत्तियों को किनारे से खाते हैं। पौधे की पत्तियाँ जाल या जाल जैसी दिखाई देती हैं।

प्रबंधन

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- मानसून पूर्व बुवाई न करे।
- अनुशंसित मात्रा मे बीज का उपयोग करे एवं उचित दूरी पर बुवाई करें।
- पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखना चाहिए।
- सोयाबीन की अंतरफसल या तो (शीघ्र पकने वाली) अरहर की किस्म या मक्का या ज्वार के साथ 4:2 के क्रम में की जानी चाहिए।
- संक्रमित पौधों के भागों, अण्डों और युवा लार्वा को एकत्रित कर नष्ट कर दें।

खेत की सफाई: संक्रमित पौधों के हिस्सों को कम से कम 10 दिनों में एक बार हटा दें और उन्हें खाद के गड्ढे में दबा दें ताकि उनकी संख्या पर नजर रखी जा सके और उन्हें कम किया जा सके।

प्रकाश जाल: कुछ रात्रिचर कीटों जैसे कि रोयेंदार इल्ली (सकारात्मक प्रकाशानुवर्ती) के वयस्कों को पकड़ने के लिए प्रति हेक्टेयर एक प्रकाश जाल (200 मर्करी वेपर लैंप) स्थापित करें।

- जब इल्लियों की संख्या 10ध्मी पंक्ति लंबाई (ई.टी.एल.) तक पहुंचने की संभावना होती है तब एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर का प्रथम छिड़काव 40 से 45 दिन पर एवं दूसरा छिड़काव 10 से 15 दिन के अंतराल पर क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 एस.ई 150 मिली. प्रति हेक्टेयर फली अवस्था पर करें।

साप्ताहिक सुविचार

वही उन्नति करता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है।
– स्वामी रामतीर्थ

पौध संरक्षण के प्रति जरूरी सतर्कता

कृषक दूत सम्पादकीय

देश में हर वर्ष करोड़ों रुपये का अनाज खेत से खलिहान तक किसानों की लापरवाही के कारण बर्बाद हो जाता है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक देश में प्रति वर्ष 35 प्रतिशत अनाज कीट व्याधियों की वजह से नष्ट हो जाता है। देश में मात्र 8 से 10 प्रतिशत किसान ही फसल संरक्षण के प्रति जागरुक हैं। शेष किसान पौध संरक्षण के फायदा या नुकसान से अनजान हैं। फसल संरक्षण, फसल उत्पादन बढ़ाने का प्रमुख कृषि कार्य है। फसलों की बोनी से लेकर कटाई-गहाई एवं भंडारण तक सतर्कता की जरूरत है। देश में किसानों द्वारा पौध संरक्षण के लिए रासायनिक एवं जैविक कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है। खरपतवारनाशक से लेकर कीटनाशक तक का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है। कीटनाशकों की गुणवत्ता को लेकर हमेशा संशय बना रहता है। हर वर्ष लाखों किसान दोयम दर्जे के कीटनाशकों के कारण ठगी के शिकार होते हैं। चमचमाती बोतलों में आकर्षक पैकिंग के साथ मिलने वाले खरपतवारनाशी अथवा कीटनाशकों की गुणवत्ता सही नहीं होने से किसानों को दोहरा नुकसान होता है। ऐसी स्थिति में जानकारी मिलने पर भी संबंधित के खिलाफ कठोर दंडात्मक कार्यवाही नहीं होने से इनके हौंसले बुलंद रहते हैं। चंद रूपयों के पीछे विक्रेता का साथ मिलने से हर साल किसानों के साथ धोखा किया जाता है जो राष्ट्र एवं किसान दोनों के लिए नुकसानदायक है। फसल सुरक्षा में उपयोग होने वाले कीटनाशकों की गुणवत्ता परखना सबसे जरूरी है। गुणवत्ता हीन कीटनाशक किसानों का पूरा साल खराब कर देते हैं।

पौध संरक्षण के प्रति किसानों को जागरुक किया जाना अत्यधिक जरूरी हैं। इसके लिए कृषक प्रशिक्षण के माध्यम से उपयोगिता बताना चाहिए। साथ ही रासायानिक कीटनाशकों एवं जैविक कीटनाशकों का तुलनात्मक अध्ययन किसानों के लिए जरूरी है। जैविक विधि किसानों के लिये सबसे सुरक्षित एवं कम खर्चीला है। जो प्रदायक कीटनाशकों की गुणवत्ता के प्रति संवेदनशील नहीं हैं उन्हें जांच के दायरे में लेकर कार्यवाही किये जाने की जरूरत है। समय-समय पर कीटनाशकों का सेंपल लेकर उनका गुणवत्ता परीक्षण किया जाना चाहिए। दोषी निर्माता के खिलाफ आपराधिक प्रकरण कायम करने की जरूरत है। फसल चाहे जो भी हो सुरक्षित एवं अनुशंसित कीटनाशकों का प्रयोग किया जाना जरूरी है।

किसानों के लिये सामयिक सलाह
सोयाबीन में कीट रोग प्रबंधन

सोयाबीन उत्पादन करने वाले कृषकों के लिये गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए निम्नानुसार समायिक उपयोगी सलाह दी गयी है।

रोग प्रबंधन :-

- रायजोक्टानिया एरिअलब्लाइट रोग के लक्षण दिखाई देने पर उसके नियंत्रण हेतु अनुशंसित फफूंदनाशक फ्लुक्सापग्रोक्साड+ पायरोक्लोस्ट्रोबीन (300 ग्रा./हे.) या पायरोक्लोस्टचोबीन इपोक्कोसीकोनाजोल+ (750 मिली./हे.) या पायरोक्लोस्ट्रोबीन 20 प्रतिशत डब्ल्यूजी (375-500 ग्रा/हे) का अपनी फसल पर छिड़काव करें।
- एन्थ्राक्नोज रोग के प्रारंभिक लक्षण देखे जाने पर प्रारंभिक अवस्था में ही इसके नियंत्रण हेतु टेबूकोनाजोल 25.9 ई.सी. (625 मिली/हे.) या टेबूकोनाजोल 38.39 एस.सी. (625 मिली/हे.) या टेबूकोनाझोल 10 प्रतिशत+सल्फर 65 प्रतिशत डब्ल्यूजडी (1.25 किग्रा./हे.) या कार्बेन्डाजिम 12 प्रतिशत+मेन्कोजेब 63 प्रतिशतद डब्ल्यू.पी. (1.25 किग्रा/हे.) से फसल पर छिड़काव करें।
- पीला मोजक रोग के लक्षण दिखने पर प्रारंभिक अवस्था में ही रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर निष्कासित करें तथा इन रोगों को फैलाने वाले वाहक सफेद मक्खी/एफिड की रोकथाम हेतु थायोमिथोक्सम+लैम्ब्डासायहेलोथ्रिन (125 मिली/हे.) या बीटासायफ्लुथ्रिन+इमिडाक्लोप्रिड (350 मिली/हे.) या एसिटेमीप्रीड 25 प्रतिशत+बायफेंथ्रिन 25 प्रतिशत डब्ल्यूजी (250 ग्रा./हे.) का छिड़काव करें। इनके छिड़काव से तना मक्खी का भी नियंत्रण किया जा सकता है। यह भी सलाह है कि सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु कृषकगण अपने खेत में विभिन्न स्थानों पर पीला स्टिकी रैप लगाएं।

कीट प्रबंधन :-

- चक्रभृंग के लक्षण दिखाई देने पर प्रारंभिक अवस्था में ही इसके नियंत्रण हेतु थायक्लोप्रिड 21.7 एस.सी. (750 मिली/हे.) या टेट्रानिलिप्रोल 18.18 एस.सी. (250-300 मिली/हे.) या क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी 18.50 प्रतिशत एस.सी. (150 मिली/हे.) या इमामेक्टीनबेन्जोएट (425 मिली /हे.) या प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. (1 लीटर/हे.) का छिड़काव करें। यह भी सलाह दी जाती है कि इसके फैलाव की रोकथाम हेतु प्रारंभिक अवस्था में ही पौधे के ग्रसित भाग को तोड़कर नष्ट कर दें।
- बिहार हेयरी कैटरपिलर का प्रकोप होने पर झुण्ड में रहने वाली इल्लियों को प्रारंभिक अवस्था में ही पौधे सहित खेत से निष्कासित करें एवं फसल पर फ्लूबेंडियामाइड 20 प्रतिशथ डब्ल्यूजी (250-300 ग्रा/हे.) या फ्लूबेंडियामाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. (150 मिली/हे) लैम्ब्डासायहेलोथ्रिन 4.90 प्रतिशत सी.एस. (300 मिली/हे.) या इंडोक्साकार्ब 15.80 प्रतिशत ई.सी. (333 मिली/हे.) छिड़काव करें।
- सेमीलूपर इल्ली के नियंत्रण के लिए इनमें से किसी भी एक रसायन का छिडकाव करें- क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी., (150 मि.ली./हे.) या इमामेक्टिनबेंजोएट 1.90 (425 मि.ली./हे), या फ्लूबेंडियामाइड 20 डब्ल्यू.जी. (250-300 ग्राम/हे) या फ्लूबेंडियामाइड 39.35 एस.सी. (150 मि.ली.) या इंडोक्साकार्ब 15.8 एस.सी. (333 मि.ली/हे.) या लैम्बडासायहेलोरिन 04.90 सी.एस. (300 मिली/हे.) या प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. (1 ली/हे.) या नोवाल्युरोन+इन्डोक्साकार्ब 04.50 प्रतिशत एस.सी. (825-875 मिली/हे.) या क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 09.30 प्रतिशत + लैम्बडासायहेलोथ्रिन 04.60 प्रतिशत जेड.सी. (200 मिली/हे.) या ब्रोफ्लानिलाइड 300 ग्रा./ली. एस.सी. (42-62 ग्राम/हे) का छिड़काव करें।
- तम्बाकू की इल्ली में नियंत्रण हेतु इनमें से किसी भी एक रसायन का छिड़काव करें- स्पायनेटोरम 11.7 एस.सी. (450 मिली/हे) या क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी., (150 मि.ली./हे) या इमामेक्टिनबेंजोएट 01.90 (425 मि.ली./हे) या फ्लूबेंडियामाइड 20 डब्ल्यू.जी. (250-300 ग्राम/हे) या फ्लूबेंडियामाइड 39.35 एस.सी. (150 मि.ली.) या इंडोक्साकार्ब 15.8 एस.सी. (333 मि.ली./हे) या नोवाल्युरोन+इन्डोक्साकार्ब 04.50 प्रतिशत एस.सी. (825-875 मिली/हे) या ब्रोफ्लानिलाइड 300 ग्रा./ली. एस.सी. (42-62 ग्राम/हे.) का छिडकावकरें।
- पत्ती खाने वाली तीनों इल्लियों (सेमीलूपर/तम्बाकू/चने की इल्ली) के एक साथ नियंत्रण हेतु स्पायनेटोरम 11.7 एस.सी. (450 मिली/हे.) या क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी. (150 मिली/हे.) या पूर्व मिश्रित कीटनाशक जैसे क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 09.30+लैम्ब्डासायहेलोरिन 09.50 प्रतिशत जेड.सी. (200 मिली/हे.) का छिड़काव करें।

अन्य सस्य क्रियाओं का अनुपालन

- सोयाबीन फसल में 3 दिन से अधिक समय का जलजमाव नुकसानदायक होता है, अतः अतिरिक्त जल निकासी सुनिश्चित करें। ▶ घनी फसल होने पर सोयाबीन में चक्रभृंग कीट का प्रकोप अधिक होने की संभावना होती है। अतः दो रिंग दिखाई देने वाली ऐसीमुरझाई/लटकी हुई ग्रस्त पत्तियों को प्रारंभिक अवस्था में ही (एक सप्ताह के अन्दर) तने से तोड़कर जला दें या खेत से बाहर करें। ▶ अपने खेत की नियमित निगरानी करें एवं खेत में जाकर कई स्थानों के पौधों को हिलाकर सुनिश्चित करें कि क्या आपके खेत में किसी इल्ली/कीट का प्रकोप हुआ है या नहीं और यदि है तो कीड़ों की अवस्था क्या है। तद्नुसार उनके नियंत्रण के उपाय अपनायें।

फसल संरक्षण के अन्य उपाय

- सोयाबीन की फसल में पक्षियों की बैठने हेतु टी आकार के बर्ड-पर्चेस लगाये। इससे कीट-भक्षी पक्षियों द्वारा भी इल्लियों की संख्या कम करने में सहायता मिलती है। ▶ जिन रसायनों (कीटनाशक/ खरपतवारनाशक/ फफूंदनाशक) के मिश्रित उपयोग की वैज्ञानिक अनुशंसा या पूर्व अनुभव नहीं है, ऐसे मिश्रण का उपयोग नहीं करें, इससे फसल को नुकसान हो सकता है।

प्रस्तुति-कृषि विज्ञान केन्द्र, धार (म.प्र.)

अनमोल वचन

फल की अभिलाषा छोड़कर कर्म करने वाला मनुष्य ही मोक्ष प्राप्त करता है।
– गीता

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

श्रावण शुक्ल/ भाद्र पक्ष कृष्ण विक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
18 अगस्त 26	मंगलवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-6	
19 अगस्त 26	बुधवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-7	
20 अगस्त 26	गुरुवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-8	
21 अगस्त 26	शुक्रवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-9	
22 अगस्त 26	शनिवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-10	
23 अगस्त 26	रविवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-11	पवित्रा एकादशी
24 अगस्त 26	सोमवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-12	पवित्रा चतुर्थ श्रावण सोमवार
25 अगस्त 26	मंगलवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-13	
26 अगस्त 26	बुधवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-14	प्रदोष व्रत
27 अगस्त 26	गुरुवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-14 (पूर्णिमा)	पंचक 1.38 दिन से
28 अगस्त 26	शुक्रवार	श्रावण शुक्ल पक्ष-15	पंचक, रक्षाबंधन
29 अगस्त 26	शनिवार	भाद्र पक्ष कृष्ण पक्ष-1	पंचक भुजरिया
30 अगस्त 26	रविवार	भाद्र पक्ष कृष्ण पक्ष-2	पंचक
31 अगस्त 26	सोमवार	भाद्र पक्ष कृष्ण पक्ष-3	पंचक 3.54 शाम तक

सफेद लट (व्हाइट ग्रब) की रोकथाम

- **आर.डी. बारपेटे** (वैज्ञानिक)
- **डॉ. संजीव वर्मा** (वैज्ञानिक)

कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल (म.प्र.)

सफेद लट सामान्यतः सब्जी वाली फसलों, कन्द वाली फसलों में हानि पहुंचाती है, परन्तु विगत कुछ वर्षों में मुख्य फसलें जैसे- सोयाबीन एवं मक्का की फसल भी इस कीट से प्रकोपित हो रही है।

इस कीट का प्रकोप फसल की आरंभिक अवस्था में खेत में पैच में होता है। प्रकोपित पौधा अचानक बिना किसी अन्य लक्षण से सूखने लगता है। इस पौधे को खिंचने पर यह बड़ी आसानी से उखड़ जाता है। इस पौधे की प्रमुख एवं सहायक जड़ें कीट के द्वारा खाकर नष्ट कर दी जाती हैं।

कीट की पहचान

- अंग्रेजी के 'सी' अक्षर की तरह गोलाई में मुड़ी हुई सफेद मोटी इल्ली जिसका सिर गहरे भूरे रंग का होता है।
- कच्ची गोबर की खाद एवं पूर्व फसल के अवशेष होने पर इस कीट की तीव्रता को बढ़ाता है।
- इस कीट का वयस्क ताम्बई रंग का रात्रिचर होता है जो फसल सहित अन्य जंगली झाड़ियों की पत्तियों को खाकर पत्ती विहिन कर देता है एवं इल्ली अवस्थ फसलों की जड़ों को खाकर फसल को सुखा देती है।

सफेद लट का जीवन चक्र

अंडा चरण: सफेद लट का वयस्क मादा देर से बसंत या गर्मियों की शुरूआत में मिट्टी में अपने अंडे देती है। ये अंडे आमतौर पर सफेद या क्रीम रंग के और अंडाकर आकार के होते हैं। अंडे के चरण की सटीक अवधि तापमान और प्रजातियों जैसे विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है।

लार्वा चरण: सफेद लट का अंडा चरण होते ही अंडे फूटते हैं, इन अंडों से सफेद ग्रब के लार्वा निकालते हैं। इसका शरीर देखने में सी आकार का दिखाई देता है। यह मलाईदार-सफेद रंग और एक भूरे रंग का होता है। ये लार्वा फसल या पौधों की जड़ों को खाते हैं और नुकसान पहुंचाते हैं जिससे प्रति एकड़ उत्पादन कम होता है।

प्यूपा चरण: जब लार्वा चरण पूरा हो जाता है, सफेद ग्रब लार्वा प्यूपा चरण में प्रवेश करता है। वे एक गैर-भक्षण, निष्क्रिय अवस्था में बदल जाते हैं। जहां वे अपने शरीर की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजरता है।

- **वयस्क चरण:** प्यूपा चरण पूरा करने के बाद सफेद ग्रब कीट वयस्क के रूप में निकलते हैं। इन वयस्कों को आमतौर पर जून भृंग या मई भृंग के रूप में जाना जाता है। वे चमकदार, अंडाकार आकार के शरीर के साथ मध्यम से बड़े आकार के भृंग है। वयस्क जून भृंग का रंग प्रजातियों के बीच भिन्न होता है।

प्रबंधन

- ज्यादा प्रभावित होने वाली फसल जैसे मूंगफली को क्लोरोपायरीफास 20 ई.सी. दवा से 25 मिली./कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।
- कीट ग्रस्त खेतों में आसपास मेंढ़ पर एवं झाड़ियों पर क्लोरोपायरीफास 2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी का छिड़काव कर वयस्कों को नष्ट करें। खेत में क्लोरोपायरीफास दानेदार दवाई की 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर या फिप्रोनिल दानेदार 10 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में मिलाए।
- जैव कीटनाशी मेटाराइजियम एनीसोप्ली 1200 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि उपचार करें।
- क्लोरोपायरीफास तरल 20 ई.सी. 5 लीटर प्रति हेक्टेयर गोबर या केचुआं की खाद 50-100 किलोग्राम में मिलाकर पर्याप्त नमी की अवस्था में खेत में भुरकाव करें।

सोयाबीन की फसल में सफेद लट कीट का प्रकोप

बैतूल। कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल के पौध संरक्षण वैज्ञानिक आर.डी. बारपेटे एवं अनुविभागीय कृषि अधिकारी दीपक सरियाम ने बैतूल विकाखण्ड के अनेक खेतों का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान सोयाबीन की फसल में भूमि जनित कीट सफेद लट (व्हाइट ग्रब) का प्रकोप देखा गया। स्थानीय किसान इस कीट को साबरदेही, खोदा या उडंन के नाम से भी जानते हैं। सफेद लट सामान्यत: सब्जी वाली फसलों, कन्द वाली फसलों में हानि पहुंचाती है, परन्तु विगत कुछ वर्षों में मुख्य फसलें जैसे, सोयाबीन एवं मक्का की फसल भी इस कीट से प्रकोपित हो रही है। इस कीट का प्रकोप फसल की आरंभिक अवस्था में खेत में पैच में होता है। प्रकोपित पौधा अचानक बिना किसी अन्य लक्षण से सुखने लगता है। इस पौधे को खिंचने पर यह बड़ी असानी से उखड़ जाता है। इस पौधे की प्रमुख एवं सहायक जड़ें कीट के द्वारा खाकर नष्ट कर दी जाती है। कीट अंग्रेजी के 'सी' अक्षर की तरह गोलाई में मुड़ी हुई सफेद मोटी इल्ली होती है जिसका सिर गहरे भूरे रंग का होता है। कच्ची गोबर की खाद एवं पूर्व फसल के अवशेष होने पर इस कीट की तीव्रता को बढ़ाता है। इस कीट का वयस्क ताम्बई रंग का रात्रिचर होता है जो फसल सहित अन्य जंगली झाड़ियों की पत्तियों को खाकर पत्तीविहिन कर देता है एवं इल्ली अवस्थ फसलों की जड़ों को खाकर फसल को सुखा देता है।

प्रबंधन

- ज्यादा प्रभावित होने वाली फसल जैसे मूंगफली को क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. दवा से 25 मिली प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।
- कीटग्रस्त खेतों में आसपास मेंढ पर एवं झाड़ियों पर क्लोरपायरीफास 2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी का छिड़काव कर वयस्कों को नष्ट करें। खेत में क्लोरपायरीफास दानेदार दवाई की 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर या फिप्रोनिल दानेदार 10 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में मिलाए।
- जैव कीटनाशी मेटाराइजियम एनीसोप्ली 1200 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि उपचार करें।
- क्लोरपायरीफास तरल 20 ई.सी. 5 लीटर प्रति हेक्टर गोबर या केचुआं की खाद 50-100 किलोग्राम में मिलाकर पर्याप्त नमी की अवस्था में खेत में भुरकाव करें।

- डॉ. पी.एल. अम्बुलकर
- श्वेता मसराम
- डॉ. गीता सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)

धान की कीटों से सुरक्षा

वर्तमान में मध्यप्रदेश में 40 लाख हेक्टेयर के लगभग धान की खेती की जा रही है। मध्यप्रदेश में गेहूं के बाद धान दूसरी प्रमुख अनाज फसल है। मध्यप्रदेश के प्रमुख धान उत्पादक क्षेत्रों में रीवा संभाग तथा जबलपुर संभाग प्रमुख है। इसके अलावा भोपाल, रायसेन, सीहोर एवं नर्मदापुरम जिले में भी धान की खेती की जा रही है। खरीफ ऋतु में उगाई जाने वाली धान की फसल पर कीट-व्याधि की समस्या अनुकूल मौसम के कारण अधिक होती है। धान की फसल पर रोपा अवस्था से लेकर फसल पकने तक अनेक प्रकार के कीटों का आक्रमण होता है।

सफेद पृष्ठ फुदका

- **पहचान चिन्ह:** ये फुजके पीठ वाले छोटे आकार के कीट होते हैं। इनका रंग स्लेटी होता है। वयस्क फुदकों की पीठ पर काली धारी होती है। इसका सिर सूंड की भांति आगे निकला होता तथा पैरों पर कम संख्या में रोम होते हैं। पंख की शिरायें गहरे रंग की होती हैं।
- **क्षति के लक्षण:** इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही हानि पहुंचाते हैं। प्रकोपित फसल की पत्तियां पीली होने लगती हैं तथा अग्र सिरे से सूखना आरंभ करती है। अधिक प्रकोपित होने पर फसल पकने की अवस्था पर फुदका-जलन के लक्षण भी दिखाई देते हैं।

हरा फुदका

- **पहचान चिन्ह:** वयस्क फुदके लगभग 5 मिमी लम्बे हरे चमकदार होते हैं। इनके अग्र पंखों पर काले रंग के स्पष्ट धब्बे होते हैं। इन कीटों का सिर उल्टे वाय आकार का होता है। पैरों पर कांटेदार रोम पाये जाते हैं। शिशु सफेद रंग के हो जाते हैं।
- **क्षति के लक्षण:** इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही पौधों से रस चूसकर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से हानि पहुँचाते हैं ।ये कीट धान की फसल में टुंगरु वायरस रोग के वाहक होते हैं। अधिक प्रकोप के कारण पत्तियां पीली पड़कर मुरझा जाती हैं।

भूरा फुदका

- **पहचान चिन्ह:** कीट हल्के भूरे रंग का होता है तथा इसकी लंबाई 30 मिमी होती है। इस कीट का नर लगभग 2.5 मिमी लंबा होता है।
- **क्षति के लक्षण:** यह कीट धान के पौधे की पत्तियों एवं तने से रस चूसकर फ्लोयम एवं जायलम से को बंद कर देता है। तने के बीच पिथ को भी क्षति पहुंचाता है फलस्वरुप पत्तियां सुखी हुयी तथा भूरे रंग की हो जाती हैं। इस अवस्था को फुदक झुलस कहते है । प्रारंभ में यह एक स्थान में रहते हैं जो बाद में सारे खेत में फैल जाते हैं। यदि इसका आक्रमण पौधे की प्रारंभिक अवस्था में होता है तो पौधों मे किल्ले नही निकलने पाते हैं तथा यदि पुष्प गुच्छ निकलने के बाद आक्रमण होता है तो अधिकांश बालों में दाने नहीं बनते। कीट गर्म वातावरण तथा अधिक आर्द्रता की दशाओं में अधिक सक्रिय रहता है। धान का खेत कटने के पश्चात यह घास एवं खरपतवारों पर जीवन निर्वाह करता है।

धान का गंधी बग

- **पहचान चिन्ह:** अंडे से निकले शिशु हरे रंग के पतले शरीर वाले होते हैं। वयस्क मत्कुण के शरीर का रंग पीलापन लिये हरा होता है जो कि बाद में भूरा हो जाता है। शरीर पतला लगभग 16 मिमी लम्बा तथा सिर के निचले तल पर 4 खण्डीय चोंच पर गंध ग्रंथियां होती हैं जिनसे एक विशेष प्रकार की गंध निकलती है। इसीलिये इसे गंधी बग कहते हैं। अग्र जोड़ी पंखों का आधा अग्र भाग चमकीला और पिछला भाग झिल्ली जैसा होता है। इस कीट की टांगें काफी लंबी होती हैं।
- **क्षति के लक्षण:** इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही अपने चुसने एवं चुभाने वाले मुखांगों से कोमल पत्तियों, तनों तथा दूधिया अवस्था में धान की बालियों का रस चूसकर हानि करते हैं। प्रकोपित पौधों की पत्तियां पीली पड़कर कमजोर हो जाती हैं। पत्तियों पर कवक का प्रकोप हो जाने से उनमें भरे काले धब्बे पड़ जाते हैं। ग्रसित बालियों के दाने खोखले तथा हल्के हो जाते हैं और छिलकों का रंग सफेद हो जाता है। जिस स्थान से यह रस चूसता है वहां पर काला या भूरा निशान पड़ जाता है। कीट मार्च से नवम्बर तक सक्रिय रहते हैं।

गंगई मक्खी या गाल मिज

- **पहचान चिन्ह:** वयस्क मक्खी मच्छर के समान दिखाई देती है। इसका शरीर कोमल, टांगें पतली लम्बी तथा पंख रोयेंदार होते हैं। नर का रंग काला तथा मादा के उदर का रंग चमकीला लाल होता है।
- **क्षति के लक्षण:** इस कीट की इल्ली अवस्था जिसे मैगट कहते हैं, हानिकारक होती है। मैगट पौधों के तनों के आंतरिक भाग को काटकर खाती है जिससे तना खोखला हो जाता है। ग्रसित पौधों में दैहिकीय परिवर्तन होने के कारण पौधे की बढ़वार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा पौधों की मध्य पत्ती के आधारीय भाग में या कल्लों में गांठ बाद में खोखली होकर चांदी जैसे सफेद रंग की हो जाती है फलस्वरुप रजत पोई या सिल्वर शूट बनाता है। ग्रसित पौधे सूख जाते हैं तथा उनमें बाली नहीं बनती। यह कीट मई से सितम्बर तक सक्रिय रहता है।

आर्मी वार्म

- **पहचान चिन्ह:** वयस्क भूरे रंग का शलभ होता है जिसके शरीर पर बाल तथा धब्बे पाये जाते हैं। अग्र पंखों के बाहरी किनारों पर छाटे-छोटे गहरे रंग के धब्बों की कतार होती है। इल्ली सक्रिय तथा मटमैले रंग की होती है जो बाद में हरे रंग की हो जाती है। इसका सिर लाल तथा शरीर पर लम्बी धरियाँ होती हैं। इल्ली हल्का सा स्पर्श पाते ही सिकुड़कर गोल हो जाती है।
- **क्षति के लक्षण:** इस कीट की सूंडी अवस्था ही हानिकरक होती है। नव विकसित सूंडी धान की पत्तियां खाती है तथा उसमें केवल मोटी शिरायें ही बचती हैं। सूंडी की चतुर्थ एवं पंचम अवस्था सबसे अधिक हानि करती है। बाली निकलने की अवस्था में यह सबसे अधिक हानि करती है। इस अवस्था में यह तने से बाली को काटकर खाती है। अतः इसे इयरहेड कटिंग केटरपिलर भी कहा जाता है। इसकी सूंडियां धान के पौधों के कल्लों के पास दिन के समय छिपी रहती हैं तथा रात्रि के समय सक्रिय रहकर हानि करती है। ये सूंडियाँ एक खेत से दूसरे खेत में एक साथ चलकर पहुँचती हैं इसलिये इसे फौजी कीट या आर्मी वार्म कहते है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज, जैविक उत्पाद एवं सूक्ष्म पोषक तत्व के अधिकृत विक्रेता
प्रो. सुनील कुशवाहा
मे. कुशवाहा बीज भंडार
मेन मार्केट, ग्राम पंचायत के सामने, देवराकलां, जिला-कटनी (म.प्र.) मो.6263564682, मूंगू भाई-9630184058

सोंधिया बीज भंडार की ओर से समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज, जैविक उत्पाद एवं सूक्ष्म पोषक तत्व, स्प्रे पंप के अलावा समस्त प्रकार के घरेलू उपकरण जैसे गैस चूल्हा रिपेरिंग एवं टॉर्च सुधारे एवं बेचे जाते हैं।
प्रो. अजय सोंधिया
में. सोंधिया बीज भंडार
अस्पताल चौराहा, देवलोंद (बाणसागर) जिला-शहडोल(म.प्र.) मो.9424335104

कुशवाहा बीज भंडार की ओर से समस्त कृषक बंधुओ को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज, स्प्रे पंप के अलावा समस्त प्रकार की कृषि संबंधी जानकारियां उपलब्ध है।
प्रो. सुरेश कुशवाहा
मे. कुशवाहा बीज भंडार
शाहपुर रोड, खटखरी, जिला-मऊगंज (म.प्र.) मो. 9993868871

समस्त कृषि विभाग करेली के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
एस के सोनी (एस.ए.डीओ.) राम कुमार उइके, कीर्ति लोधी, आदिति चौकसे, रूपाली राजपूत, किंजल त्रिवेदी, सोनू पनिका, नीकेता गड़ेवाल, नम्रता वर्मा, प्रिया तिवारी, प्रियंका चौधरी, राम नारायण रघुवंशी, भगवान दास चौकसे, रूचि शर्मा के अलावा समस्त कर्मचारीगण।
सौजन्य से :- महाजन एजेंसी
मेन रोड करेली, जिला नरसिंहपुर (म.प्र.)
9201029999, 8770090533
अधिकृत विक्रेता:- ड्रिप एरिगेशन, स्प्रीकलर पाईप एवं कृषि यंत्र के विक्रेता

फाल आर्मी वर्म से मक्का फसल की सुरक्षा

- **आर.डी. बारपेटे** (वैज्ञानिक)
- **डॉ. संजीव वर्मा** (वैज्ञानिक)
- **मेघा दुबे** (वैज्ञानिक)
- **नेपाल बारस्कर** (कार्यक्रम सहायक)

कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल (म.प्र.)

इस कीट का वैज्ञानिक नाम स्पोडोप्टेरा फ्रजीपर्डा है। यह कीट पहली बार 2016 की शुरुआत में मध्य और पश्चिमी अफ्रीका में पाया गया था और कुछ ही दिनों में लगभग पूरे उप-सहारा अफ्रीका में तेजी से फैल गया। मई 2018 में कर्नाटक के शिवमोगा में पाया गया। इसके बाद हसन, बेंगलुरु व चिकबालापुर में देखा गया, वहां से 2019-20 में इस कीट का प्रकोप मध्यप्रदेश में पहली बार देखा गया। फाल आर्मी वर्म के फैलाव की वजहः जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ संक्रमित और गैर-संक्रमित क्षेत्रों के बीच बढ़ता व्यापार और परिवहन फॉल आर्मी वर्म के फैलाव के कारण हैं, जिसने संभावित रूप से दुनिया की खाद्य सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है। गर्म और आर्द्र तापमान (20 से 32 डिग्री सेल्सियस के बीच) तथा लंबे व शुष्क समयांतराल फॉल आर्मी वर्म के प्रजनन के लिये अनुकूल कारक हैं।

पोषक पौधे: यह कीट 80 प्रकार की फसलों पर अपना गुजारा कर सकता है प्राय: मक्का, धान, गन्ना, कपास, ज्वार, सोयाबीन आदि फसलों पर ज्यादा तौर पर ये दिखाई देता है, परंतु इसका पसंदीदा भोजन मक्का है।

पहचान के लक्षण: फॉल आर्मी वर्म कीट छोटी से तीसरी अवस्था तक इसके लार्वा को पहचानना मुश्किल है, लेकिन जैसे-जैसे बड़ा होता, इसकी पहचान आसान हो जाती है। इसका लार्वा भूरा, धूसर रंग का होता है, जिसके शरीर के साथ अलग से टयूबरकल दिखता है। इस कीट के पीठ के नीचे तीन पतली सफेद धारियां और सिर पर एक अलग सफेद उल्टा अंग्रेजी शब्द का 'वाई' के आकार का निशान दिखता है। साथ ही लार्वा के 8वें बॉडी सेगमेंट पर 4 बिंदु वर्गाकार आकृति में देखे जा सकते हैं। फॉल आर्मी वर्म कीट के सिर के तरह चार बिंदु होते हैं।

जीवन चक्र

अंड़े: भारतीय उपमहाद्वीप के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु का आर्मी वर्म के अनुकूल होना, जो उन्हें पूरे साल भोजन उपलब्ध कराती है।

एक बार में दो सौ तक अंडे: इसकी वयस्क मादा एक बार में 50 से 200 तक अंडे देती है। यह मादा अपने जीवन काल (7 से 21 दिन) में 10 गुच्छे अंडे यानी 1700 से 2000 तक अंडे दे सकती है। अण्डे गुंबद आकार के होते हैं, जो लगभग 0.4 मिमी. व्यास एवं 0.3 मिमी. ऊंचाई के होते हैं। मादा पत्तियों के नीचे अण्डों को रखना पसंद करती है। ये अंडे 2 से 3 दिन में फूट जाते हैं और इनमें से लार्वा निकलते हैं।

इल्ली: यह अवस्था 14 से 22 दिन की होती है। यह छह अलग-अलग इंस्टारों से गुजरती है। परिपक्व इल्ली की लंबाई लगभग 1.5 से 2 इंच (38 से 51 मिमी.) होती है।

कोकून/शंखी: इल्ली एक शंखी में 8 से 30 दिनों के लिए परिवर्तित होती है। कोकून अवधि पर्यावरण में तापमान पर निर्भर करती है।

वयस्क: वयस्क पतंगे में 32 से 40 मिमी. पंख फैलाव होता है। अगले पंखों के सिर पर भूरे रंग का निशान होता है और पिछला पंख सफेद होता है। एक वयस्क लगभग 10 से 21 दिनों तक जीवित रहता है। एक वयस्क रात में 100 किमी तक एवं अपने जीवनकाल में 2000 किमी तक उड़ सकती है। इस कीट का जीवन चक्र 30 से 61 दिन का होता है। जीवन चक्र गर्मी के दौरान 30 दिनों के भीतर तथा बसंत और शरद ऋतु के मौसम के दौरान 60 दिनों के भीतर पूरा हो जाता है। सर्दियों के दौरान जीवन चक्र 80 से 90 दिनों तक रहता है। एक वर्ष में इनकी पीढ़ियों की संख्या जलवायु के आधार पर भिन्न होती है।

क्षति के लक्षण

पौधों को ऐसे पहुंचाता है नुकसान: छोटी लार्वा पौधों की पत्तियों को खुरचकर खाती है, जिससे पत्तियों पर सफेद धारियां दिखाई देती है। जैसे-जैसे लार्वा बड़ी होती है, पौधों की ऊपरी पत्तियों को खा जाती है और लार्वा बड़ा होने के बाद मक्का के गाले में घुसकर पत्तियां खाती रहती है। पत्तियों पर बड़े गोल-गोल छिद्र एक ही कतार में नजर आते हैं। ये कीट सबसे पहले पौधे की पत्तियों पर हमला करते हैं। इनके हमले के बाद पत्तियां ऐसी दिखाई देती हैं जैसे उन्हें कैंची से काटा गया हो।

ऐसे करें प्रबंधन

मॉनिटरिंग: इस कार्य हेतु स्पोडोप्टेरा फ्रीपर्डा का फेरोमोन ट्रेप 10 प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।

कल्चरल विधि

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करके शंखी अवस्था को नष्ट करें।
- समय पर बुआई करें। मानसून वर्षा के साथ ही बुआई करें, विलंब ना करें।
- अनुशंसित पौध अंतरण पर कतार में बुआई करें 75 से.मी. 20 से.मी.।
- संतुलित उर्वरकों का अनुशंसित मात्रा में, विशेषकर नत्रजन की मात्रा का प्रयोग अधिक ना करें (120-140: 60-80: 30)।
- अन्तरवर्ती फसल के रूप में दलहनी फसल मूंग, उड़द लगाए।
- जिन क्षेत्रों में खरीफ की मक्का ली जाती है उन क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन मक्का ना लें तथा अनुशंसित फसल चक्र अपनाएं।
- फसल के आसपास 3 से 4 कतार में ट्रेप फसल जैसे- नेपियर घास लगाएं। फसल को अजेडिरेक्टीन 1500 पी.पी.एम. की दर से छिड़काव करें जिससे कीट के अण्डे फूटने में बाधा निर्माण होती है।
- प्यूपा से वयस्क बनने को रोकने के लिए भूमि में नीम की खली 250 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर डालें।

यांत्रिक विधि

- अंडे के गुच्छे एवं इल्लियों ढूंढकर हाथ से इकट्ठा कर नष्ट करें।
- प्रकाश प्रपंच (एक प्रति हेक्टेयर) लगाकर इसके मोथ (तितली) पर नजर रखें।
- प्रारंभिक अवस्था में ग्रसित पौधे में लकड़ी का बुरादा, राख एवं बारीक रेत पौधे की पोंगली में डालें।

जैविक विधि

- अन्तरवर्ती फसल के रूप में दलहनी फसल मूंग, उड़द लगाएं साथ ही सजावटी फूलों के पौधे लगायें जिससे मित्र कीट की संख्या में बढ़ोतरी की जा सकती है।

जैविक कीटनाशक के रूप में बीटी 1 किग्रा प्रति हेक्टेयर अथवा बिवेरिया बेसियाना 1.5 ली प्रति हेक्टेयर का छिड़काव सुबह अथवा शाम के समय करें।

रासायनिक विधि

- लगभग 5 प्रतिशत प्रकोप होने पर रासायनिक कीटनाशक के रूप में फ्लूबेंन्डामाइट 20 डब्ल्यूडीजी 250 ग्राम प्रति हेक्टेयर।
- इनोसेड 45 एस.सी, 200-250 ग्राम प्रति हेक्टेयर।
- इथीफेनप्रॉक्स 10 ईसी 1 लीटर प्रति हेक्टेयर।
- एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. का 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर में कीट प्रकोप की स्थिति अनुसार 15-20 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार छिड़काव करें।
- प्रथम छिड़काव बुआई के बाद 15 दिन की अवधि में अवश्य करें।

● डॉ. अखिलेश कुमार ● डॉ. स्मिता सिंह
कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

अरहर में अपनायें समन्वित कीट रोग प्रबंधन

प्रमुख दलहनी फसल अरहर में कई तरह के कीट-रोग आक्रमण करते हैं। कीट-रोग के कारण अरहर का उत्पादन प्रभावित होता है। प्रस्तुत आलेख में अरहर के कीट-रोग प्रबंधन का समन्वित उपाय दिया गया है।

दलहनी फसलों में अरहर का विशेष स्थान है।अरहर की दाल में लगभग 20 से 21 प्रतिशत तक प्रोटीन पायी जाती है, साथ ही इस प्रोटीन का पाच्यमूल्य भी अन्य प्रोटीन से अच्छा होता है। शुष्क क्षेत्रों में अरहर किसानों द्वारा प्राथमिकता से बोई जाती है। अरहर की दीर्घकालीन प्रजातिया मृदा में 200 किलोग्राम तक वायुमंण्डलीय नाइट्रोजन का स्थरीकरण कर मृदा उर्वरकता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। असिंचित क्षेत्रों में इसकी खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है, क्योंकि गहरी जड़ के एवं अधिक तापक्रम की स्थिति में पत्ती मुड़ने के गुण के कारण यह शुष्क क्षेत्रों में सर्वउपयुक्त फसल है। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक एवं आन्ध्र पदेश देश के प्रमुख अरहर उत्पादक राज्य हैं।

प्रमुख कीट

- **फली मक्खी:** यह फली पर छोटा सा गोल छेद बनाती है। इल्ली (मैगट) अपना जीवनकाल फली के भीतर दानों को खाकर पूरा करती है एवं बाद में प्रौढ़ बनकर बाहर आती है। मादा प्रौढ़ वृद्धिरत फलियों में अंडे रोपण करती है। अंडों से मेगट बाहर आते हैं और दाने को खाने लगते हैं और फली के अंदर ही शंखी में बदल जाती है जिसके कारण दानों का सामान्य विकास रूक जाता है। दानों पर तिरछी सुरंग बन जाती है और दानों का आकार छोटा रह जाता है। शंखी में सेस प्रौढ़ बाहर आती है, जिसके कारण फली पर छोटा सा छेद दिखाई पड़ता है। फली मक्खी तीन सप्ताह में एक जीवन चक्र पूर्ण करती है।
- **फली छेदक इल्ली:** छोटी इल्लियां फलियों के हरे ऊत्तकों को खाती हैं व बडे होने पर कलियों, फूलों, फलियों व बीजों को नुकसान करती है। इल्लियां फलियों पर टेढ़े-मेढ़े आकार के बड़े छेद बनाती है। मादा प्रौढ़ छोटे सफेद रंग के अंडे देती है। इल्लियां पीली, हरी, काली रंग की होती हैं तथा इनके शरीर पर हल्की गहरी पट्टियां होती हैं। शंखी जमीन में रहती है, प्रौढ़ निशाचर होते है जो प्रकाश प्रपंच पर आकर्षित होते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में चार सप्ताह में एक जीवन चक्र पूर्ण करती हैं।
- **फली का मत्कुण:**- मादा प्राय: फलियों पर गुच्छों में अंडे देती है। अंडे कत्थई रंग के होते हैं। इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही फली एवं दानों का रस चूसते हैं, जिससे फली आड़ी-तिरछी हो जाती है एवं दाने सिकुड़ जाते हैं। एक जीवन चक्र लगभग चार सप्ताह में पूरा करते हैं।
- **प्लूम माथ:** इस कीट की इल्ली फली पर छोटा सा गोल छेद बनाती है। प्रकोपित दानों के पास ही इसकी विष्ठा देखी जा सकती है। कुछ समय बाद प्रकोपित दाने के आसपास लाल रंग की फफूंद आ जाती है। मादा गहरे रंग के अंडे एक-एक करके कलियों व फली पर देती है। इसकी इल्लियाँ हरी तथा छोटे-छोटे काटों से आच्छादित रहती हैं। इल्लियाँ फलियों पर ही शंखी में परिवर्तित हो जाती है। एक जीवन चक्र लगभग चार सप्ताह में पूरा करती है।
- **बिलिस्टर ब्रिटल:** ये भृंग कलियों, फूलों तथा कोमल फलियों को खाती है। जिससे उत्पादन में काफी कमी आती है। यह कीट अरहर, मूंग, उडद तथा अन्य दलहनी फसलों को नुकसान पहुंचाता है। सुबह-शाम भृंग को पकड़कर नष्ट कर देने से प्रभावी नियंत्रण हो जाता है।
- **कीट प्रबंधन:** कीटों के प्रभावी नियंत्रण हेतु समन्वित संरक्षण प्रणाली अपनाना आवश्यक है।

कृषि कार्य द्वारा

- गर्मी में गहरी जुताई करें ।
- शुद्ध/सतत अरहर न बोयें ।
- फसल चक्र अपनायें ।
- अपने क्षेत्र में उचित प्रतिरोधी किस्मों को लगायें।
- क्षेत्र में एक समय पर बोनी करना चाहिए।
- रासायनिक खाद की अनुशंसित मात्रा ही डालें।
- अरहर में अन्तरवर्तीय फसलें जैसे ज्वार, मक्का, सोयाबीन या मूंगफली को लेना चाहिए।

यांत्रिकी विधि द्वारा

- प्रकाश प्रपंच लगायें।
- फली छेदक कीट की निगरानी के लिए 5 फीरोमोन ट्रेप/हे. का प्रयोग करें।
- पौधों को हिलाकर इल्लियों को गिरायें एवं उनकों इकट्ठा करके नष्ट करें।
- खेत में चिड़ियों के बैठने के लिए अंग्रेजी शब्द ''टी'' के आकार की खुटिया लगायें।

जैविक प्रबंधन

- एच.ए.एन.पी.वी. 500 एल.ई./हे. . यू.वी. रिटारडेन्ट 0.1 प्रतिशत+गुड़ 0.5 प्रतिशत मिश्रण का शाम के समय छिड़काव करें।
- बेसिलस थूरेंजियन्सीस 1 किलोग्राम प्रति हेक्टर+टिनोपाल 0.1 प्रतिशत+गुड़ 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

जैव-पौध पदार्थों के छिड़काव द्वारा

- निंबोली सत 5 प्रतिशत का छिड़काव करें ।
- नीम तेल या करंज तेल 10-15 मि.ली.1 मि.ली. चिपचिपा पदार्थ प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- निम्बेसिडिन 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

रासायनिक प्रबंधन

- आवश्यकता पड़ने पर एवं अंतिम हथियार के रूप में ही कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें।
- फली मक्खी एवं फली के मत्कुण के नियंत्रण हेतु सर्वांगीण कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें जैसे- थायोमेथोक्जाम 12.6 लैम्बडासायहलोथिन 9.5 की 250 मिली का 500 लीटर पानी में घोलकर/ हेक्टेयर छिड़काव करें।
- फली बेधक की संख्या आर्थिक क्षति स्तर पर या उससे ऊपर होने पर ही रसायनिक कीटनाशियों का प्रयोग करें। इण्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. 500 मि.ली. मात्रा प्रति हेक्टर के दर से 500 लीटर पानी में मिलाकर दो बार प्रथम छिड़काव 50 प्रतिशत फूल एवं फल की अवस्था एवं दूसरा छिड़काव प्रथम छिड़काव के 20 दिन बाद छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकतानुसार छिड़काव 15 दिन बाद दोबारा करना चाहिएं।
- इस कीट के नियंत्रण हेतु क्लोरेंटाऊनीलीप्रोल+ लैम्बडासाइहैलोथ्रिन 13.9 प्रतिशत 80 एम. एल. अथवा क्लोरेंट्रानीलीप्रोल 18.5 प्रतिशत 50 एम. एल. अथवा इंडोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत 150 एम. एल. प्रति एकड़ की दर से 150 लीटर पानी के साथ प्रभावित फसल पर दोपहर बाद छिड़काव करें।

प्रमुख रोग

- **उकटा रोग:** यह फ्यूजेरियम नामक कवक से फैलता है। रोग के लक्षण साधारणतया फसल में फूल लगने की अवस्था पर दिखाई पड़ते हैं। सितंबर से जनवरी महीनों के बीच में यह रोग देखा जा सकता है।

पौधा पीला होकर सूख जाता है। इसमें जड़ें सड़कर गहरे रंग की हो जाती हैं तथा छाल हटाने पर जड़ से लेकर तने की ऊंचाई तक काले रंग की धारियां पाई जाती हैं। इस बीमारी से बचने के लिए रोगरोधी जातियां जैसे जे.के.एम-189, सी.-11, जे.के.एम-7, बी.एस.एम.आर.-853, 736 आशा आदि बोये। उन्नत जातियों को बीज बीजोपचार करके ही बोयें। गर्मी में गहरी जुताई व अरहर के साथ ज्वार की अंतरवर्तीय फसल लेने से इस रोग का संक्रमण कम रहता है।

- **बांझपन विषाणु रोग:** यह रोग विषाणु (वायरस) से होता है। इसके लक्षण ग्रसित पौधों के उपरी शाखाओं में पत्तियां छोटी, हल्के रंग की तथा अधिक लगती है और फूल- फली नहीं लगती है। यह रोग (माईट) मकड़ी के द्वारा फैलता है। इसकी रोकथाम हेतु रोग रोधी किस्मों को लगाना चाहिए।

खेत में बे-मौसम रोग ग्रसित अरहर के पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। मकड़ी का नियंत्रण करना चाहिए। बांझपन विषाणु रोग रोधी जातियां बोना चाहिए।

फायटोपथोरा झुलसा रोग: रोग ग्रसित पौधा पीला होकर सूख जाता है। इसमें तने पर जमीन के उपर गठान नुमा असीमित वृद्धि दिखाई देती है व पौधा हवा आदि चलने पर यहीं से टूट जाता है। इसकी रोकथाम हेतु उन्नत जातियों को बीजोपचार करके ही बोयें। बुआई रिज पर करना चाहिए और चावल या मूंग की फसल साथ में लगाये। रोग रोधी जाति को बोना चाहिए।

समस्त कृषक बंधुओं को राठौर कृषि सेवा केन्द्र की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, स्प्रे पंप एवं एवं समस्त प्रकार के बीज के अधिकृत विक्रेता
प्रो. खेमचन्द्र राठौर
मे.राठौर कृषि सेवा केन्द्र
मेन मार्केट, कर्रापुर, जिला-सागर (म.प्र.)
मो. 9329271959

समस्त कृषक बंधुओं को करण बीज भंडार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

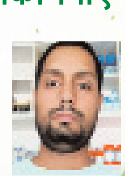
उच्च क्वालिटी के सब्जी बीज, पेस्टीसाइड एवं स्प्रे पंप के अलावा समस्त प्रकार के कृषि उपकरण उपलब्ध है।
अधिकृत विक्रेताः-
प्रो. रामकरण कुशवाहा
मे.करण बीज भंडार
सुरेन्द्र कुशवाहा
मेन रोड, बस स्टैंड खन्नौधी, जिला-शहडोल (म.प्र.)
मो. 9826459045, 8989534856

समस्त कृषक बन्धुओं को सॉई कृपा कृषि केन्द्र स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज एवं जिंक सल्फर के अधिकृत विक्रेता।

मे. सॉई कृपा कृषि केन्द्र
73, कृषि उपज मंडी, पचौरी पेट्रोल पंप के सामने दीनदयाल चौक जबलपुर (म.प्र.)
प्रो. सत्यपाल पटेल
सत्या पटेल
मो. : 9977773369, 8085154345

- **डॉ. कैलाश नारायण गुप्ता**
  अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, तिल एवं रामतिल, भा.कृ.अ.प.
  जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर (म.प्र.)
- **डॉ. शुभम मिश्रा**
  फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
  उच्च शिक्षा एवं उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

तिल की कीट-रोगों से सुरक्षा

तिल के कीट एवं उनका नियंत्रण

तिल की पत्ती एवं फली छेदक: तिल में पत्ती व फली छेदक का प्रकोप मध्य जुलाई से अक्टूबर तक रहता है किन्तु सर्वाधिक क्षति अगस्त के अन्तिम सप्ताह से लेकर सितम्बर में जब फूल आने के समय होती है।

इसकी इल्लियां पत्तियों को मोड़कर तथा उनके अन्दर रहकर नुकसान पहुंचाती है। ये फूल एवं कली को भी नुकसान पहुंचाती है। इसकी रोकथाम के लिये क्विनॉलफास 25 ई.सी. 2 मि.ली./ली. या प्रोफनोफास 50 ई.सी .2 मि.ली. या स्पाइनोसेड 45 एस.सी. 0.15 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। पहला छिड़काव फूल आने पर करें तथा दूसरा 15 दिन बाद करें।

- **तिल गाल मक्खी:** इस कीट का प्रकोप फसल में फूल आने के समय वर्षा होने पर अधिक होता है। मेंगट/इल्ली फूल व फल्ली के अन्दर रहकर नुकसान पहुंचाती है। इसकी रोकथाम के लिये डायमेथोमेट 3 मि.ली. या मोनोक्रोटोफास 3 मि.ली. या इमिडाक्लोरप्रिड 3 मि.ली. को प्रति 10 लीटर पानी में घोल कर या नीम का तेल 10 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- **तिल हॉक माथ:** इस कीट की लट पत्तियों को बड़े पैमाने पर खाकर पौधों को पत्तीरहित करती है तथा कलियों, फूलों को भी खाकर नष्ट करती हैं। इस कीट से बचाव हेतु गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए। नियंत्रण के लिये प्रारम्भिक अवस्था में लटों को एकत्रित करके नष्ट करें। पत्ती व कली छेदक कीट के नियन्त्रण हेतु क्विनॉलफास 1.5 प्रतिशत 10 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से खड़ी फसल पर भुरकाव करें।

तिल की फसल के मुख्य रोग एवं उनका उपचार

- **फाइलोडी रोग:** यह रोग फाइटोप्लाज्मा द्वारा होता है एवं इसका संचरण ओरोसियस आरिएन्ऐलीस नामक रोगवाहक कीट द्वारा फैलता है। रोगग्रसित पौधों में संकरी छोटी पत्तियोंयुक्त, झाड़ीनुमा, संरचना वाले होते हैं। इस रोग से ग्रसित पौधों में बीज का निर्माण नहीं होता है। इस रोग के उपचार के लिये बुवाई के 30-40 और 60 दिन बाद डाइमेथोएट या मोनोक्रोटोफास या इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 एस.एल 3 मिली दवा को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- **तना एवं जड़ सड़न:** इस रोग से रोगग्रस्त पौधों की जड़ें व तना भूरे रंग के हो जाते हैं तथा रोगी पौधों को ध्यान से देखने पर तना, शाखाओं, पत्तियों एवं फलियों पर छोटे-छोटे काले दाने दिखाई देते हैं। रोगी पौधे जल्दी पक जाते हैं तथा दाने अपरिपक्व रह जाते हैं। यह रोग फसल पकने की अवधि तक कभी भी हो सकता है। ऐसे क्षेत्र जहां यह रोग ज्यादा आता है बुवाई के पहले रोग प्रारंभ होने पर थाइरम 0.15 प्रतिशत+केप्टान 0.25 प्रतिशत यूरिया 2 प्रतिशत के घोल से रोगी पौधों तथा पास के स्वस्थ पौधों पर 7 दिन के अन्दर से 3 बार छिड़काव करें। ट्राइकोडर्मा 5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से 10 क्विंटल गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई पूर्व भूमि में देना प्रभावी पाया गया है।
- **फाइटोफ्थोरा अंगमारी:** रोग की शुरूआत में पत्तियों पर भूरे रंग के शुष्क छोटे धब्बे बनते हैं जो बाद में बड़े होकर पत्तियों को झुलसा देते हैं। तने पर इसका प्रकोप भूरी धारियों के रूप में दिखाई देता है। अधिक प्रकोप होने पर हानि शत-प्रतिशत हो सकती है। इस रोग को नियंत्रण करने हेतु फसल पर रोग के लक्षण दिखने पर रिडोमिल एम.जेड 2.0 ग्राम, कवच 2.5 ग्राम या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर खड़ी फसल में 15 दिन के अंतर से तीन बार छिड़काव करें।
- **सर्कोस्फोरा पत्ती धब्बा अंगमारी:** इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों पर आई के समान धब्बे बनते हैं। इस रोग के उपचार के लिये डाइथेन जेड 78, 2.5 ग्राम या टॉपसिनएम 1 ग्राम दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव रोग प्रारंभ होने पर 15 दिन के अन्तर से 2 बार करें।
- **अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा:** रोग की शुरुआत में पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के तारेनुमा धब्बे बनते हैं। रोग की तीव्रता अधिक होने पर पूरे पौधे में गहरे रंग के धब्बे बनते हैं। इसके उपचार के लिये डायथेन एम 45, 2.5 ग्राम या टिल्थ 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव रोग प्रारंभ होने पर 15 दिन के अन्तर से 2 बार करें।
- **भभूतिया रोग:** यह रोग सितम्बर माह के आरम्भ में पत्तियों की सतह पर सफेद चूर्ण के रूप में जम जाती है। ज्यादा प्रकोप होने पर पत्तियां पीली पड़कर सूखने से झड़ जाती है। पौधों की वृद्धि ठीक से नहीं हो पाती। इस रोग के उपचार हेतु घुलनशील गंधक 3 ग्राम या बाविस्टीन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव बीमारी शुरू होने पर 7 दिन के अंतर से 2-3 बार करें।

प्रमुख तिलहनी फसल तिल में कई तरह के कीट-रोग लगते हैं, समय पर प्रबंधन नहीं करने से तिल के उत्पाद में अत्यधिक नुकसान होता है। प्रस्तुत आलेख में प्रमुख कीट एवं रोग के बारे में विस्तार से बताया गया है।

● डॉ. आशीष श्रीवास्तव,
प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय,
गंजबासौदा जिला- विदिशा (म.प्र.)

वर्षाकालीन सब्जियों को रोगों से बचाएं

सब्जियों के उत्पादन से किसानों को नियमित आय प्राप्त होती है। इसलिए प्रत्येक किसान को कुछ न कुछ क्षेत्रफल पर सब्जियों की खेती आवश्यक रूप से करना चाहिए। जिस प्रकार किसान भाइयों ने खेती के साथ साथ दुग्ध व्यवसाय को अपनाया है उसी प्रकार सब्जी को व्यवसाय के रूप में अपनाना चाहिए। हमारा देश चीन के बाद सब्जी उत्पादन में दूसरे नंबर पर है। इसके बावजूद इसकी प्रति व्यक्ति उपलब्धता में कमी का प्रमुख कारण पैदावार में बढ़ोतरी न होना है। सब्जियों में अनेकों बीमारियों का प्रकोप होता है जिससे उनकी गुणवत्ता एवं उत्पादन में काफी कमी आ जाती है।

मानव जीवन में सब्जियां अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। क्योंकि सामान्यत: स्वास्थ्य के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्धि एवं विटामिन और खनिज तत्वों की आपूर्ति सब्जियों के माध्यम से ही होती है। सब्जियों की खेती नगदी फसल के रूप में की जाती है, जो हमारे कृषकों की आमदनी का प्रमुख स्रोत ही है। कृषि में परंपरागत फसलों में एक निश्चित समय बाद आमदनी प्राप्त होती है वह भी एक ही बार जबकि रोज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नियमित आय होना अत्यंत आवश्यक है। सब्जियों के पौधों को रोगों से बचाने के लिए रोगों की पहचान एवं प्रबंधन के उपायों की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है।

सब्जियों के महत्वपूर्ण रोग

आर्द्रगलन: यह फफूंदजनित रोग है। इस रोग के प्रकोप से बीज जमीन के नीचे अंकुरण से पहले या अंकुरण के 10 से 15 दिन बाद नर्सरी में पौधा भूमि की सतह के पास से गलकर गिर जाता है। यह रोग छोटे पौधों में अधिक होता है। यह समस्या वर्षा ऋतु में अधिक गम्भीर हो जाती है। रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां पीली होने लगती हैं और कई बार पत्तियों पर सफेद रंग के धब्बे भी उभरने लगते हैं।

प्रबन्धन

- नर्सरी उठी हुई क्यारी पद्धति से तैयार करें। जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो।
- ग्रीष्मकाल में नर्सरी वाले स्थान पर भूमि सौर्यकरण द्वारा भूमि को उपचारित कर लें।
- बीज को बुआई से पूर्व ट्राईकोडर्मा विरडी अथवा स्यूडोमोनास से उपचारित करें।
- बीज को बुआई से पूर्व थाइरम 75 डब्ल्यू एस नामक फफूंदीनाशक या मेटालेक्सिल व थाइरम (1:1 अनुपात में मिलाकर) 2.5 ग्राम प्रति किलाग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

भभूतिया रोग: इस रोग को चूर्णी फफूंद रोग के नाम से भी जाना जाता है। गर्मी के मौसम में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर सफेद चूर्ण के समान धब्बे उभरने लगते हैं। पत्तों और पौधों के दूसरे भागों पर फफूंदी की सफेद आटे जैसी तह जम जाती है। रोग बढ़ने के साथ पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं और पौधों के विकास में बाधा आती है। फल का गुण व स्वाद खराब हो जाता है।

प्रबंधन

- बीज को बुआई से पूर्व ट्राईकोडर्मा बिरडी अथवा स्यूडोमोनास से उपचारित करें।
- बीज को बुआई से पूर्व थाइरम 75 डब्ल्यू एस नामक फफूंदीनाशक 2.5 ग्राम प्रति किलाग्राम बीज की दर से से उपचारित करें।
- 500 ग्राम घुलनशील गंधक (सल्फेक्स या वेटसल्फ) 200 लीटर पानी में प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।

कुकड़ा रोग: इस रोग को घुरचा रोग, बंधा रोग, पत्ती मरोड़ रोग, चुरड़ा-मुरड़ा रोग, लीफ कर्ल आदि कई नामों से जाना जाता है।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

किसानों को कीट-रोग नियंत्रण की सलाह

शहडोल। कृषि विज्ञान केंद्र शहडोल एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग शहडोल के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम चतहां एवं भमरहा का भ्रमण कर खरीफ फसलों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने खेतों में फसलों की स्थिति का जायजा लेते हुए किसानों की समस्याओं का समाधान बताया तथा मौसम के अनुरूप वैज्ञानिक खेती अपनाने की सलाह दी।

केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मृगेन्द्र सिंह ने किसानों को बताया कि अगस्त माह सोयाबीन, धान एवं मक्का जैसी खरीफ फसलों के वानस्पतिक विकास, पुष्पन एवं दाना बनने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। मौसम में लगातार हो रहे बदलाव और वर्षा के असमान वितरण को देखते हुए खेतों में जल प्रबंधन, संतुलित पोषण तथा कीट एवं रोग नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। धान की फसल इस समय कल्ले फूटने की अवस्था में है। किसानों को नाइट्रोजन की दूसरी खुराक समय पर देने, खरपतवार नियंत्रण करने तथा खेत में 2 से 5 सेंटीमीटर तक पानी का स्तर बनाए रखने की सलाह दी गई।

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज, स्प्रे पंप के अलावा समस्त प्रकार के कृषकोपयोगी जानकारियां उपलब्ध है।
प्रो. राहुल सागर
मे. न्यू राहुल एग्रो एजेंसी
मेन रोड भैरुंदा, नसरूल्लागंज, सीहोर (म.प्र.) मो. 9171959521

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के हाईब्रिड सब्जी बीज के अलावा किसानों को उचित सलाह उपलब्ध कराई जाती है।
प्रो. प्रभात पटेल
प्रताप बीज भंडार
मो. 9329746811
शॉप नं. 19, महिला मार्केट, बल्देवबाग-जबलपुर (म.प्र.)

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
उच्च कोटि के कीटनाशक दवाईयां एवं कृषि बीज मिलने का एक मात्र स्थान
प्रो. यशराज सिंह तंवर
मे. रजत कृषि सेवा केन्द्र
बागली रोड, मिसरोद, जिला-भोपाल (म.प्र.)
मो. 9893353468, 8839321614

(पृष्ठ 8 का शेष) धान कीटों की....

तना छेदक

- **पहचान चिन्ह:** वयस्क का रंग पीला, सफेद होता है। मादा कीट के अग्र पंख संतरे रंग के होते हैं तथा प्रत्येक पंख पर मध्य मे छोटा काले रंग का धब्बा होता है। पूर्ण विकसित इल्ली कोमल तथा गुलाबी रंग की होती है। **क्षति के लक्षण:** प्रारंभ में इल्ली पत्तियों की सतह को हानि करती है तथा बाद में यह तने पर एक छोटा छिद्र बनाकर कोमल भागों को हानि पहुँचाती है जिससे डेड हर्ट बन जाता है। इसे खींचने पर यह आसानी से खींच जाता है। प्रभावित बालियाँ सफेद हो जाती है जिसमें दाने नही बनते।

समन्वित कीट प्रबंधन के उपाय

सस्य क्रियाओं द्वारा ▸ **ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई:** ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई, मेढ़ों की सफाई तथा पिछली फसल के अवशेषों को नष्ट करें। ▸ **बुवाई/रोपाई का समय:** शीघ्र एवं उचित समय पर बुवाई/रोपाई करना आवश्यक है। नर्सरी में बीजों की बुवाई जून तथा रोपाई जुलाई माह तक पूर्ण कर लेने पर नाशी कीटों का प्रकोप कम किया जा सकता हैं। ▸ **रोपों का उपचार:** रोपाई से पूर्व रोपों की जड़ों को क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. (200 मिली. दवा 200 लीटर पानी) के घोल में डुबाकर प्रति एकड़ की दर से उपचारित करना चाहिए। स्वस्थ्य बीज प्रतिरोधक जातियो का चुनाव करें।

यांत्रिक विधियों द्वारा

- हानिकारक कीटों के अण्ड समूह एवं इल्लियों को एकत्रित कर नष्ट करें।

पौधों के प्रकोपित भागों को नष्ट करें।

प्रकोपित भाग	हानिकारक कीट
चमकीली प्ररोह पत्तियाँ	गॉल मिज
मृत केन्द्र खोखला सड़ा तना	तना छेदक
ग्रसित पत्तियाँ	हिस्पा, पत्ती मोड़क
अण्ड समूह	तना छेदक

- रोपों की पत्तियों के अग्र सिरे को काटकर अलग कर देवें ।
- प्रकाश प्रपंच का उपयोग करें।

सोयाबीन में माइक्रो गोल्ड का करें प्रयोग

रामा फास्फेट्स की किसानों को सलाह

इंदौर। इस समय आपकी सोयाबीन की फसल में नीचे सुझाए गए फर्टिलाइजर एवं माइक्रोन्यूट्रिएंट से आप लोगों की फसल सोयाबीन की जो लगी हुई है उसमें बहुत शानदार इसका रिजल्ट देखियेगा, और यह चार दिन बाद खेत में अलग दिखेगा, आज का एक फोटो व्हाट्सएप करिएगा और आज के पांचवें दिन बाद का एक फोटो व्हाट्सएप करिएगा, देखिए क्या अंतर है हम खुद देखने के बाद दूसरे लोगों को भी इसके लिए सजेस्ट कर सकते हैं, पहले हम अपने खेत पर स्वयं देखें वह ज्यादा अच्छा है, आप लोगों के लिए यह बहुत ही सही समय यह कार्य करने के लिए है यह फसलों के लिए वरदान साबित होगा, अगर आप लोग यह प्रयोग करते हैं तो इसके लिए हम बहुत आभारी रहेंगे किसान भाइयों के, क्योंकि इस समय धूप नहीं निकल रही है, और उसमें पौधा पोलन क्रिया नहीं कर पाता है, फुल लगता है और नीचे गिर जाता है, उसको सेटिंग होने के लिए और दाना फॉर्म में कन्वर्ट होने के लिए इन चीजों का बहुत ही बड़ा आवश्यक रोल होता है, क्योंकि इस समय पूरे दिन में 2 घंटा भी पौधा धूप नहीं देख पता है, जब की कम से कम इस समय जब फसल में फूल आता है 6 घंटा 24 घंटे में धूप होना आवश्यक है, ऐसी स्थिति में यह फर्टिलाइजर जिसे हम संपूर्ण खाद के रूप में जानते हैं संपूर्ण इसका ब्रांड नाम है, राम फास्फेट लिमिटेड का यह उत्पाद है, और माइक्रो न्यूट्रिएंट जो माइक्रो गोल्ड के नाम से आता है, इसी के साथ हम मैग गोल्ड जिसे हम मैग्नीशियम सल्फेट के नाम से जानते हैं और यूरिया की मात्रा हमारी फसल के लिए रामबाण साबित होगी यही समय है जब फूल से पौधा फल बनाने का कार्य करता है इस समय इन तत्वों का होना अति आवश्यक है, क्योंकि धूप की अनुपस्थिति में यह खाद एवं माइक्रोन्यूट्रिएंट्स पौधे में इनर्जी यानी पोषक तत्व पूर्ण मात्रा में पौधों में पहुंचाने में सहायक होते हैं जिससे पौधा ट्रेस अवस्था में नहीं आता है, और इससे बहुत ही अच्छा उत्पादन हम किसान भाई प्राप्त कर सकते हैं, इस खाद एवं माइक्रोन्यूट्रिएंट की मात्रा का डोज निम्न प्रकार है प्रति एकड़ के लिए, संपूर्ण खाद 50 किलोग्राम, माइक्रो गोल्ड 10 किलोग्राम, मेग गोल्ड 10 किलोग्राम, स्टार गोल्ड 85 प्रतिशत 10 किलोग्राम, यूरिया 15 किलोग्राम, बोरान 20 प्रतिशत 500 ग्राम, इन सभी को खेत पर एक पाल बिछाकर सबको एक साथ मिलकर और किसान भाई तत्काल छिड़काव कर दे, ज्यादा समय तक इसको मिलकर नहीं रखता है यह बिल्कुल विशेष ध्यान रखना है।

न्यू हालैण्ड ट्रैक्टर की बिक्री 25% बढ़ी

नई दिल्ली। कृषि उपकरण विनिर्माता कंपनी सीएनएच की भारतीय इकाई ने वर्ष 2026 की पहली छमाही में घरेलू बाजार में 30,248 ट्रैक्टर बेचे। यह एक साल पहले की समान अवधि की तुलना में 42 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान कंपनी की भारत में बाजार हिस्सेदारी भी अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। सीएनएच इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नरेंद्र मित्तल ने बताया कि 2026 की जनवरी-जून अवधि के दौरान कंपनी का ट्रैक्टर निर्यात करीब 20 प्रतिशत बढ़कर 6,666 ट्रैक्टर हो गया। उन्होंने कहा कि वर्ष की शुरुआत में अमेरिकी शुल्क से कुछ समय के लिए बाधा आई थी, पर बाद में स्थिति सामान्य होने पर निर्यात में फिर तेजी आई। कंपनी भारत में 'न्यू हॉलैंड' और 'केस आईएचं' ब्रांड के तहत कारोबार करती है। मित्तल ने कहा कि पहली छमाही में घरेलू ट्रैक्टर उद्योग में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

स्मरणीय है कि सीएनएच इंडिया भारत में न्यू हालैण्ड ब्रांड से ट्रैक्टर का उत्पादन एवं विक्रय करते है। पिछले कुछ सालों में कंपनी का मार्केट शेयर तेजी से बढ़ा है।

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज, स्प्रे पंप के अलावा समस्त प्रकार के कृषकोंपयोगी जानकारियां उपलब्ध है।

प्रो.राजेन्द्र भामोरिया
9754444004
सनावद रोड, बेड़िया, जिला-खरगौन (म.प्र.)

समस्त कृषक बंधुओ को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

हार्दिक शुभकामनायें
मे. चौहान सीड्स स्टोर
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, खाद, बीज के अधिकृत विक्रेता
अविनाश चौहान
मेन मार्केट, सब्जी मंडी-अनूपपुर (म.प्र.)
मो. 9425427431, 9425427557

समस्त किसान भाइयों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयाँ, खाद, उन्नत किस्म के बीज एवं स्प्रे पंप के विश्वसनीय विक्रेता
प्रो. राजेन्द्र मूणत
मै. स्वराज कृषि सेन्टर
नगर पालिका कम्पलेक्स पुराना बस स्टैण्ड इंदौर रोड, राजगढ़, जिला-धार (म.प्र.)
मो. 9424522066, 9977750199

भारत का पहला 3 सक्रिय तत्वों वाला दानेदार कीटनाशक
अब कम मात्रा में ज़्यादा असर!
टैग स्टेम-ली

टैग स्टेम-ली जो तना छेदक और पत्ता लपेटक कीट पर करें जमके वार
प्रमुख लाभ
3 सक्रिय घटक फार्मूला | एक शक्तिशाली समाधान | स्वस्थ धान की फसलें
TROPICAL AGRO
ट्रॉपिकल एग्रो सिस्टम (इं) प्रा.लि., म.प्र. (छ.ग.)
105 कॉर्पोरेट हाउस, 169 आर.एन.टी. मार्ग इंदौर (म.प्र.)
फोन : 0731-4045702 E-mail:indore@tropicalagro.com

(पृष्ठ 12 का शेष)

वर्षाकालीन सब्जियों की...

इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां ऊपर या नीचे की तरफ मुड़ने लगती हैं। थ्रिप्स के कारण पत्तियां ऊपर की तरफ मुड़ने लगती हैं। माइट के प्रकोप से पत्तियां नीचे की तरफ मुड़ने लगती हैं। पत्तियां एवं पत्तियों की शिराएं मोटी हो जाती हैं। प्रभावित पौधे झाड़ियों की तरह दिखने लगते हैं। इस विषाणु जनित रोग के कारण पौधों का विकास रुक जाता है और पौधों में फल कम लगते हैं। इस रोग के कारण मिर्च की फसल को बहुत नुकसान होता है।

प्रबंधन

- कुकड़ा रोग के लक्षण दिखने पर पौधों को नष्ट कर दें।
- बीज की बुवाई से पहले खेत की एक बार गहरी जुताई अवश्य करें।
- यदि खेत में रोग से ग्रस्त पौधे हैं तो उन्हें नष्ट कर दें।
- प्रमाणित एवं रोग रहित बीज का चयन करें।
- सफेद मक्खियों से निजात पाने के लिए प्रति लीटर पानी में 5.0 मिलीलीटर नीम का तेल मिलाकर छिड़काव करें।

उकठा रोग: यह एक फफूंदजनित रोग है। यह फफूंद मिट्टी में काफी लंबे समय तक रहते हैं।

शुरुआत में पौधों की ऊपरी पत्तियां मुरझाने लगती हैं। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां नीचे की तरफ झुकने लगती हैं। कुछ समय बाद पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं। समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो पूरा पौधा पीला होकर सूख जाता है। मौसम में होने वाला बदलाव भी इस रोग का प्रमुख कारण है।

प्रबंधन

- फसल चक्र अपनाएं।
- पौधों को लगाने से पहले खेत की एक बार गहरी जुताई करें।
- भूमि शोधन के लिए खेत तैयार करते समय प्रति एकड़ खेत में 40 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में 1.5 से 2.0 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी मिला कर प्रयोग करें।
- बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 2.0 ग्राम थीरम से उपचारित करें।
- खड़ी फसल में रोग के लक्षण नजर आने पर संक्रमित पौधों को सावधानीपूर्वक खेत से बाहर निकाल कर नष्ट कर दें।
- रोग के लक्षण दिखने पर कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. 0.2 प्रतिशत घोल को पौधों की जड़ों में डालें।

एन्थ्रेक्नोज: यह रोग ''कोलेटोट्राईकम केप्सीकाई'' नामक फफूंद से होने वाला अति व्यापक एवं महत्वपूर्ण रोग है। इस रोग से ग्रसित फलों पर छोटे-छोटे काले रंग के धब्बे बन जाते हैं। विकसित पौधों पर शाखाओं का कोमल शीर्ष भाग उपरी से नीचे की ओर सूखना प्रारम्भ हो जाता है।

प्रबंधन

- फसल चक्र अपनायें तथा स्वस्थ व प्रमाणित बीज बोयें।
- रोग की प्रारंभिक अवस्था में ताम्रयुक्त फफूंदनाशक दवा का प्रयोग करें।

तना सड़न रोग: इस रोग के होने पर जमीन की सतह से सटे तने मुलायम होने लगते हैं। कुछ समय बाद पौधों का तना सड़ने लगता है। रोग बढ़ने पर पौधे सूख कर गिरने लगते हैं। इस रोग से बचने के लिये मिर्च की नर्सरी में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।

प्रबंधन

इस रोग से बचने के लिए मिर्च की नर्सरी में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें। बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 1.0 ग्राम कार्बेडाजिम से उपचारित करें। इसके अलावा प्रति लीटर पानी में 2.0 ग्राम केप्टान मिलाकर छिड़काव करें।

सब्जियों में रोगों से बचाव के प्राकृतिक उपाय

- गर्मी की जुताई करें, ताकि खेत के नीचे की मिट्टी को सूर्य की गर्मी प्राप्त हो सके और भूमि के अन्दर पड़े हुए फफूंद सूर्य की तेज धूप में नष्ट हो सके।
- निरोगी फसल एवं अधिक उत्पादन हेतु साफ एवं स्वस्थ बीजों का ही प्रयोग करें।
- खेत में पूर्व फसल के अवशेष एवं डंठल आदि एकत्र कर नष्ट कर दें।
- उचित समय पर बुवाई करें एवं कीट व रोगों के प्रकोप के अनुसार बुवाई समय में परिवर्तन करें।

▸ एक खेत में हर मौसम एक ही फसल न लगाएं। फसल चक्र अपनाते हुए हर मौसम में बदल-बदल कर फसल लगावें। ▸ मुख्य फसल के साथ अन्य प्रपंच फसलें लगावें ताकि विभिन्न-विभिन्न कीटों से मुख्य फसल की सुरक्षा हो सके। जैसे- मिर्च के साथ टमाटर लगाने से विषाणु रोग से फसल का बचाव किया जा सकता है। ▸ पेड़-पौधों को सूखने एवं फफूंदजनित रोगों से बचाव हेतु गाय के ताजे गोबर में दीमक की बॉबी से निकली मिट्टी मिलाकर छिड़काव करें। ▸ बुवाई से पूर्व नीम की खली, गोबर की सड़ी हुए खाद मिलाकर उपयोग करने से विभिन्न जीवाणु जनित रोगों से फसल की सुरक्षा की जा सकती है। ▸ ट्राइकोडर्मा फफूंद द्वारा बीजोपचार करने से फसल को विभिन्न फफूंद जनित रोगों से सुरक्षित किया जा सकता है। यदि बुवाई से पूर्व बीजोपचार नहीं किया गया है तो नर्सरी से निकालकर खेत में पौधे लगाये जाने के पूर्व अंकुरित पौधों की जड़ों को ट्राइकोडर्मा फफूंद के चूर्णयुक्त पानी में 20 मिनट तक रखें तत्पश्चात् पौधे खेत में लगायें।

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

उच्च क्वालिटी के खाद, पेस्टीसाइड, स्प्रेपंप, सीमेंट एवं जैविक खाद के अलावा हार्डवेयर, बिल्डिंग मटेरियल के विक्रेता।

प्रो. मुकेश नागर

मे. नागर कृषि सेवा केन्द्र

मेन रोड, दीवटिया, जिला रायसेन (म.प्र.)

मो. 9589277415, 8085047489

समस्त कृषक बंधुओं को प्रताप एग्रो इंटरप्राइजेस की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

उच्च क्वालिटी के सब्जी बीज, अनाज बीज, पेस्टीसाइड एवं स्प्रे पंप के अलावा समस्त प्रकार के कृषि संबंधी जानकारी उपलब्ध है।

प्रो. प्रताप कुशवाहा

प्रो. अभिषेक कुशवाहा

अधिकृत विक्रेताः-

मे.प्रताप एग्रो इंटरप्राइजेस

न्यू गल्ला मंडी रोड, सेंट्रल बैंक के पीछे, ओशो कुंज-गाडरवारा जिला-नरसिंहपुर (म.प्र.)मो. 9826459045, 8989534856

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त प्रकार के कृषि बीज, कीटनाशक दवाईयां, खाद एवं स्प्रेपंप के अधिकृत विक्रेता।

प्रो. रोहित आरोरा

अध्यक्ष एग्रो इनपुट्स एशोसिएशन

लक्ष्मी द्वार कॉम्पलेक्स, जी.पी. पैलेस गौहरगंज रोड, औबेदुल्लागंज, जिला रायसेन (म.प्र.) मो. 9981268905

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त प्रकार के कृषि बीज, कीटनाशक दवाईयां, खाद एवं स्प्रे पंप के अधिकृत विक्रेता

मे. डी.के. ट्रेडर्स

प्रो. सिद्धार्थ मित्तल, मो. 9893397096

मेन चौराहे के पास, औबेदुल्लागंज। जिला-रायसेन (म.प्र.)

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)

फोन : (0755) 4233824

मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

भैंरुदा में...

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री अर्जुन सिंह

मे. शिवशक्ति इरीगेशन

शनि मंदिर के सामने, मेन रोड, भैंरुदा, जिला-सीहोर (म.प्र.) मो. 9926989959

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स

(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

•औषधीय•वन •सब्जी•फूल•बीज•स्प्रे पंप एवं पाट्र्स •कीटनाशक •जैविक खाद •गार्डन टूल •जैविक उत्पाद •ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - •निर्मल सीड्स, जलगांव •कलश सीड्स, जालाना •अंकुर सीड्स, नागपुर •वेस्टर्न सीड्स, गुजरात •दिनाकर सीड्स, गुजरात •सटिंड सीड्स, दिल्ली •फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना •स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई •जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर •स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर •अनु प्रोडक्ट्स लि. •श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)

फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

नकली कीटनाशकों के खिलाफ 13 राज्यों में डिजिटल अभियान

कृषि राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर ने किया अभियान का शुभारंभ

नई दिल्ली। भारत के स्वतंत्रता के 80वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर क्रॉपलाइफ इंडिया ने नकली और अवैध कीटनाशकों के खिलाफ देशव्यापी डिजिटल जागरूकता अभियान शुरू किया है। अभियान का शुभारंभ कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर ने किया। इसका मुख्य संदेश जागरूक किसान बनें, असली कीटनाशक चुनें रखा गया है।

अभियान के माध्यम से बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, राजस्थान, महाराष्ट्र और गुजरात के 25 लाख से अधिक किसानों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा गया है। किसानों को पांच भाषाओं (हिंदी, तेलुगु, मराठी, तमिल और पंजाबी) में डिजिटल माध्यम से जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। अभियान के तहत किसानों को नकली कीटनाशकों की पहचान, असली उत्पाद चुनने, अधिकृत स्रोतों से खरीदारी करने और कीटनाशकों के सुरक्षित एवं जिम्मेदार उपयोग की जानकारी दी जाएगी। किसानों से प्रत्येक खरीद पर बिल या इनवॉइस लेने तथा उत्पाद के लेबल और उपयोग संबंधी निर्देशों को ध्यान से पढ़ने की अपील की गई है।

शुभारंभ अवसर पर रामनाथ ठाकुर ने कहा कि किसान भारतीय कृषि की प्रगति के केंद्र में हैं। उन्हें असली कृषि इनपुट की पहचान की जानकारी देना फसल सुरक्षा, उत्पादकता और किसानों की आय के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि नकली कीटनाशकों के खिलाफ लड़ाई में किसान, निर्माता, डीलर, वैज्ञानिक और सरकारी एजेंसियों सहित सभी हितधारकों का सामूहिक प्रयास जरूरी है।

क्रॉपलाइफ इंडिया के महासचिव दुर्गम चंद्र ने कहा कि किसानों को ज्ञान और सही जानकारी से सशक्त बनाना मजबूत एवं समृद्ध भारत के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। अभियान के माध्यम से किसानों को असली उत्पाद चुनने, खरीद का बिल लेने तथा सुरक्षित और जिम्मेदार फसल सुरक्षा उपाय अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

अभियान में किसानों को भरोसेमंद और अधिकृत स्रोतों से ही कीटनाशक खरीदने, उपयुक्त व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) का इस्तेमाल करने तथा सही उत्पाद, सही मात्रा और सही समय पर छिड़काव करने की सलाह दी जाएगी। जरूरत पड़ने पर कृषि विशेषज्ञों की सलाह लेने पर भी जोर दिया जाएगा।

967 लाख हेक्टेयर से अधिक में खरीफ बुवाई

नई दिल्ली। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अनुसार 7 अगस्त तक खरीफ फसलों के अंतर्गत बोये गये क्षेत्र का क्षेत्रफल 967 लाख हेक्टेयर से अधिक हो गया है। मंत्रालय ने बताया कि 344 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में धान की खेती की गई है, जबकि 180 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में तिलहन की बुवाई की गई है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 5 लाख हेक्टेयर से अधिक की वृद्धि है।

समस्त देशवासियों एवं कृषक महिलाओं को
लोक कल्याण भूमिका समिति की ओर से
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
अध्यक्ष
सुश्री रेखा कुशवाहा
लोक कल्याण भूमिका समिति
आधारताल-जबलपुर (म.प्र.)

स्वतंत्रता दिवस की सभी प्रदेशवासियों एवं कृषक भाईयों को
हार्दिक शुभकामनायें
डॉ. स्वप्निल दुबे
वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन
दीनदयाल कृषि विकास एवं अनुसंधान समिति, रायसेन

अक्षत नर्सरी एवं अक्षत एग्रो इंटरप्राइजेंस की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
प्रो. मीनाक्षी दान्द्रे
समस्त प्रकार के सब्जियों की नर्सरी, फलदार पौधे, सीजनल फूल, अरनामेटल पौधे, टिसूकल्चर, झरवेरा, स्ट्रोवरी, ब्लूवेरी, केले के अलावा किचन गार्डन एवं समस्त प्रकार के फलदार पौधे उपलब्ध हैं।
पाली हाउस, नेट हाउस, सब्सिडी के साथ बनाए जाते हैं। फुल प्लान्टेशन, लैंड कैपिंग, लानग्रास, ड्रिप इरिगेशन, आरगेनिंक फार्म, किचन गार्डन, ड्रीप मर्ल्चिंग, बेड मेकिंग मशीन द्वारा कार्य किये जाते है।
संपर्क-अक्षत नर्सरी
भोपाल बायपास रोड, सनोटी ब्रिज, औवेदुल्लागंज-भोपाल (म.प्र.)
मो. 9755107700, 7772067676

समस्त किसान भाईयों को सॉवरिया एग्रीटेक की ओर से 80वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
ओमप्रकाश सेकवाड़िया
संस्थापक, सॉवरिया एग्रीटेक प्रा.लि.
सॉवरिया एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड
पीएच नं. 34, सर्वे नं. 445 से 449, नागदा रोड, खाचरौद, जिला-उज्जैन (म.प्र.) - 456224
मो. 8989229091, 9826018271
खाचरोद | बड़नगर | उन्हेल | उज्जैन | खेड़ावदा | नागदा जंक्शन | रतलाम | जावरा | ताल | सैलाना | धार | घाटाबिल्लोद | बदनावर | राजोद | नागदा (धार) | पेटलावद | दलौदा | पिपलियामंडी | महिदपुर सिटी | आलोट

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, जैविक खाद एवं बीज के अधिकृत विक्रेता
मे. पंकज बीज भंडार
प्रो. पंकज आसाटी
बस स्टैंड के पास मेन रोड़, तेवरी जिला-कटनी (म.प्र.) मो. 9893428003

जिले के समस्त कृषक बंधुओं एवं विक्रेताओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
प्रो. प्रदीप जैन
प्रखर जैन
उच्च क्वालिटी के उर्वरक खाद, बीज एवं कीटनाशक दवाईयों के अधिकृत विक्रेता
नंद किशोर कोमलचन्द जैन
सब्जी मंडी नया बाजार, सागर जिला-सागर (म.प्र.)
मो. 9425425228

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें
• C&F • डिस्ट्रीब्यूटर्स • डीलर • एजेन्ट
मे. के.के. डिस्ट्रीब्यूटर्स & जबलपुर फर्टिलाइजर्स
3051 आई.टी.आई मढोताल, जबलपुर
बेलखाडू कटंगी रोड, जबलपुर (म.प्र.)
प्रो. निखिल अग्रवाल
फोन : 0761-4017711, 4019911, मो. 9827202011
E-mail- nikhilagrawal1@rediffmail.com
Website- www.kkdistributors.in

समस्त कृषक बंधुओं एवं व्यापारियों को मानिक रतन बीज भंडार की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, सब्जी बीज, प्याज बीज, गेहूं, चना, धान के अलावा कृषि से संबंधी सलाह उपलब्ध है।
प्रो. किशोर पुरवार
में. मानिक रतन बीज भंडार
घंटाघर-कटनी जिला-कटनी (म.प्र.) मो. 9827359555

जेयू एग्री प्रीटो का शानदार परिणाम

प्रीटो की कहानी- किसान की जुबानी

इंदौर। मक्का की फसल में कीटों और इल्लियों से परेशान किसानों के लिए एक बड़ी राहत भरी खबर सामने आई है। ग्राम भवनबड़ी के प्रगतिशील किसान श्री श्रवण कुमार के खेत पर जेयू एग्री साइंस की ओर से प्रीटो की दवा का एक डेमो प्लॉट लगाया गया था, जिसके परिणाम बेहद चमत्कारिक और शानदार रहे हैं। महज 5 दिन के भीतर ही इस दवा ने फसल से कीटों का पूरी तरह सफाया कर दिया है और पौधों की ग्रोथ भी बेहतरीन हो गई है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, जेयू एग्री साइंस के प्रतिनिधि पंकज कुमार शर्मा के नेतृत्व में कंपनी की टीम ने 11 अगस्त को किसान श्रवण कुमार के खेत का दौरा किया, जहाँ 6 अगस्त को इस दवा का छिड़काव किया गया था। टीम और किसानों ने जब फसल का संयुक्त रूप से अवलोकन किया, तो इसके परिणाम चौंकाने वाले थे। किसान श्रवण कुमार ने बताया कि स्प्रे से पहले फसल में खतरनाक इल्लियाँ और उनके अंडे मौजूद थे, जो मात्र 5 दिनों के भीतर पूरी तरह नष्ट हो गए। उन्होंने खुशी जाहिर करते हुए बताया कि डेमो वाले हिस्से और बिना डेमो वाले हिस्से में ज़मीन-आसमान का फर्क साफ दिखाई दे रहा है, जहाँ दवा का छिड़काव हुआ है वहाँ पौधे स्वस्थ और तेजी से बढ़ रहे हैं।

इस दवा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि किसानों को इसके लिए ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ती। प्रति पंप केवल 25 मिलीलीटर दवा डालकर ही पूरा काम हो जाता है और इसके साथ किसी भी अन्य कीटनाशक को मिलाने यानी क्रॉस करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है, जिससे किसानों का अतिरिक्त खर्च और समय दोनों बचते हैं। किसान श्रवण कुमार ने अपने सफल अनुभव के आधार पर क्षेत्र के सभी किसान भाइयों से इस आधुनिक दवा का उपयोग करने की अपील की है। वहीं, कंपनी के प्रतिनिधि पंकज कुमार शर्मा ने कहा कि जेयू एग्री साइंस का मुख्य उद्देश्य किसानों को कम से कम लागत में सबसे प्रभावी, सरल और टिकाऊ समाधान उपलब्ध कराना है। कंपनी का मानना है कि कागजी दावों के बजाय किसान जब खुद अपनी आँखों से डेमो प्लॉट के सकारात्मक परिणाम देखते हैं, तभी वे आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं। खेत पर जेयू एग्री साइंस प्रदर्शन प्लांट का आधिकारिक बोर्ड भी लगाया गया है, जिसे देखने और इसके फायदों की जानकारी लेने के लिए आसपास के कई किसान लगातार खेत का दौरा कर रहे हैं।

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त प्रकार के बीज, खाद, कीटनाशक दवाईयां, जैविक खाद एवं स्प्रे पंप के अधिकृत विक्रेता

प्रो. कांती जैन 9826664755

मे. कान्ती टेडर्स

प्रो. अभिषेक जैन 9403273168

नर्मदापुरम रोड-नई ब्रिज के पास, सर्विस रोड, बानापुरा (सिवनी मालपा) जिला-नर्मदापुरम (म.प्र.)

समस्त कृषक बंधुओं को रोहित फाटिलाइजर्स की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो. सतेन्द्र जैन

समस्त प्रकार के कृषि बीज, कीटनाशक दवाईयां, खाद एवं स्प्रेपंप के अलावा स्प्रिंकलर पाईप के अधिकृत विक्रेता।

मे. रोहित फाटिलाइजर्स एण्ड कृषि उपकरण

शॉप नंबर- 8, पिसनहारी मढ़िया जबलपुर (म.प्र.)

मो. 9424625403, 9303533814

मध्यप्रदेश की जिलेवार वर्षा

01 जून से 14 अगस्त 2026 तक (वर्षा मिमी में)

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%	जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
आगर-मालवा	541.8	578.5	-6	उज्जैन	513.3	562.5	-9
अलीराजपुर	339.3	569.7	-40	विदिशा	550.3	658.9	-16
अशोकनगर	436.5	554.2	-21	पूर्वी म.प्र.	539.2	665.5	-19
बड़वानी	458.5	421.6	9	अनूपपुर	663.2	650.4	2
बैतूल	525.2	667.6	-21	बालाघाट	737.2	821	-10
भिंड	457.3	391	17	छतरपुर	407.3	584	-30
भोपाल	756.4	613.3	23	छिंदवाड़ा	561	659.3	-15
बुरहानपुर	578.6	461.3	47	दमोह	530.8	710.4	-25
दतिया	324.8	472.3	-31	डिंडोरी	674.6	782.6	-14
देवास	644.9	581.4	11	जबलपुर	477.8	707.7	-32
धार	382	520.6	-27	कटनी	419.9	602.5	-30
गुना	673.6	612.9	10	मंडला	637.2	786.8	-19
ग्वालियर	464.3	441.8	5	नरसिंहपुर	572.6	641.2	-11
हरदा	579.2	712.7	-19	निवाड़ी	408.7	448.4	-9
इंदौर	496.8	543.2	-9	पन्ना	475.6	678.9	-30
झाबुआ	453.8	576.8	-21	रीवा	278.8	620.7	-55
खंडवा	574.8	514.6	12	सागर	473	696.9	-32
खरगोन	616.2	461.9	33	सतना	535.1	590.3	-9
मन्दसौर	499.0	531.8	-6	सिवनी	629	672.4	-6
मुरैना	248	421.7	-41	शहडोल	585.9	622.3	-6
नर्मदापुरम	528.3	790.9	-33	सीधी	574.3	630.7	-9
नीमच	493.4	500.8	-8	सिंगरौली	533.7	659.3	-19
रायसेन	631.4	688.2	-8	टिकमगढ़	364	605.8	-40
राजगढ़	714.2	570.5	25	उमरिया	556.2	640.4	-13
रतलाम	460.9	582.7	-21	मैहर	444.5	605.2	-27
सीहोर	688.1	676.3	2	मऊगंज	602.7	597.6	1
शाजापुर	504.6	576.6	-12	पांढुर्णा	479.6	523.8	-8
श्योपुर	396.2	454.4	-13	म.प्र. योग	504.3	494.2	2
शिवपुरी	471.2	521.7	-10				

(स्रोत : मौसम विभाग)

आरुष तिवारी ने लगातार दूसरी बार एशियन ओपन में जीता पदक

जकार्ता में रजत पदक जीतकर रचा इतिहास, 2025 में कांस्य के बाद उच्च श्रेणी में हासिल की बड़ी सफलता

नई दिल्ली। दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंतकुंज के कक्षा दसवीं के छात्र आरुष तिवारी ने अंतर्राष्ट्रीय फिगर स्केटिंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत का नाम रोशन किया है। 1 से 5 अगस्त 2026 तक जकार्ता, इंडोनेशिया में आयोजित एशियन ओपन फिगर स्केटिंग ट्रॉफी 2026 में आरुष ने रजत पदक हासिल किया। इस उपलब्धि के साथ वह लगातार दो वर्षों में एशियन ओपन फिगर स्केटिंग ट्रॉफी में पदक जीतने वाले भारतीय फिगर स्केटर्स में विशेष उपलब्धि दर्ज करने में सफल रहे।

आरुष ने वर्ष 2025 में मनीला, फिलीपींस में आयोजित एशियन ओपन फिगर स्केटिंग चैंपियनशिप में Basic Novice श्रेणी में कांस्य पदक जीता था। इस वर्ष उन्होंने अपनी चुनौती को और बढ़ाते हुए Intermediate Novice श्रेणी में हिस्सा लिया और रजत पदक अपने नाम किया। उच्च श्रेणी में पदक जीतना उनके लगातार बेहतर होते प्रदर्शन और कड़ी मेहनत का प्रमाण है। आरुष के लिए वर्ष 2026 उपलब्धियों से भरा रहा है। उन्होंने इस वर्ष जिन प्रमुख प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया, उनमें लगातार पोडियम फिनिश हासिल की। उन्होंने खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2026 में कांस्य पदक, 21वीं नेशनल फिगर एंड स्पीड स्केटिंग चैंपियनशिप 2026 में कांस्य पदक और एशियन ओपन फिगर स्केटिंग ट्रॉफी 2026, जकार्ता में रजत पदक जीता। आरुष की इन उपलब्धियों के पीछे नियमित अभ्यास, अनुशासन, समर्पण और बेहतर प्रदर्शन की निरंतर कोशिश रही है। महज 15 वर्ष की उम्र में उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है। आरुष केवल फिगर स्केटिंग तक सीमित नहीं हैं। उन्होंने एक युवा लेखक के रूप में भी अपनी पहचान बनाई है। उनकी पुस्तकें ''Wheels to Ice Born to Rise'' उनकी स्केटिंग यात्रा, संघर्ष, उपलब्धियों और सपनों को सामने लाती हैं। इन पुस्तकों के माध्यम से वह युवा पाठकों को बड़े सपने देखने और चुनौतियों के बावजूद निरंतर प्रयास करते रहने के लिए प्रेरित करते हैं।

DPS वसंतकुंज की प्रधानाचार्या दीप्ति वोहरा ने आरुष की उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी सफलता अनुशासन, दृढ़ता, उत्कृष्टता और विनम्रता जैसे मूल्यों का उदाहरण है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए लगातार दूसरी बार एशियन ओपन में पदक जीतना आरुष की प्रतिभा और मेहनत का प्रमाण है। स्कूल परिवार ने आरुष और उनके परिवार को इस उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अपनी उपलब्धि पर आरुष तिवारी ने कहा कि एशियन ओपन में लगातार दूसरी बार पदक जीतना उनके लिए गर्व का क्षण है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष उच्च श्रेणी में प्रतिस्पर्धा करना उनके लिए चुनौतीपूर्ण था, लेकिन कठिन अभ्यास और आत्मविश्वास से उन्होंने यह सफलता हासिल की। आरुष का अगला लक्ष्य भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतना और तिरंगे को सबसे ऊंचे पायदान पर देखना है। आरुष की उपलब्धियां देश के उन युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा हैं, जो खेल के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं। उनकी यात्रा बताती है कि लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प, अनुशासन और निरंतर मेहनत से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी सफलता हासिल की जा सकती है।

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, उन्नतशील किस्मों के बीज, जैविक खाद एवं स्प्रे पंप के अधिकृत विक्रेता
प्रो. जयराम सिंह चौहान
पंकज चौहान बीएससी (एजी)
मे. पंकज बीज भंडार
बडोरा चौक, बैतूल (म.प्र.) 8871526711
मे. पंकज कृषि सेवा केन्द्र
आमला, जिला-बैतूल (म.प्र.) 9424427106

समस्त कृषक बंधुओ को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां एवं बीज के अधिकृत विक्रेता
प्रो. प्रकाश जैन MSC A.G
मे. श्री साई कृषि किरण एग्रो क्लीनिक सेंटर
4, लाजरस कॉम्पलेक्स, बस स्टैंड के पास कोठी बाजार, बैतूल, जिला-बैतूल (म.प्र.) मो. 9425193437

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के बीज, खाद, कीटनाशक दवाईयां एवं स्प्रे पंप के अधिकृत विक्रेता
प्रो. प्रमोद सिंह चौहान
मे. फैजाबाद सीड्स सप्लाई
सब्जी मंडी, शहडोल, जिला-शहडोल (म.प्र.) मो. 9425180617

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां बीज एवं स्प्रे पंप के अधिकृत विक्रेता
प्रो. मुकेश सनोटिया
मे. नव्या कृषि सेवा केन्द्र
न्यू पेट्रोल पंप के पास मेन रोड, घोड़ाडोंगरी, जिला बैतूल (म.प्र.)
मो.8989639370, 8120915223

समस्त कृषक बंधुओ को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, खाद, बीज, चरी, बजरा एवं सब्जी बीज के अलावा कृषि यंत्र, पाइपलाइन ड्रीप, स्प्रिंकलर सेट, रोटावेटर प्लाउ, सीड ग्रेडर अनुदान पर उपलब्ध है।
प्रो. अर्जुन सिंह
मे. शिवशक्ति इरिगेशन
मंडी कॉम्पलेक्स, शनि मंदिर के सामने, भोपाल रोड, भैरुंदा जिला-सीहोर (म.प्र.) मो. 9926989959

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, खाद, बीज एवं जैविक खादवर्धक के अलावा स्प्रे पंप के अधिकृत विक्रेता
प्रो. कैलाश पटेल
मे. कैलाश ट्रेडर्स
बरमान रोड, करेली, जिला-नरसिंहपुर (म.प्र.) मो. 9584538910

सागर जिले के समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

• अत्याधुनिक विराट रोटरी टिलर
• सबसे कम लोड, सबसे ज्यादा काम
अधिकृत विक्रेताः-
मे. मलैया अभिकरण
तिलक गंज, सागर (म.प्र.) मो.8435953063

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयों एवं बीज के अधिकृत विक्रेता
मो.: 9424023927
प्रो. योगेश जोशी
जोशी कृषि केन्द्र
इंदौर अहमदाबाद रोड, नया बस स्टैंड चौराहा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, स्प्रे पंप एवं एवं समस्त प्रकार के बीज के अधिकृत विक्रेता
प्रो. गोविन्द कुशवाहा
प्रो. रामलला कुशवाहा
मे. कुशवाहा बीज भंडार
सिंधी मार्केट, बुढार, जिला शहडोल (म.प्र.)
मो. 9424332752, 8877231502

सोयाबीन में फूल एवं कैनोपी विकास के लिए

कृषि रसायन का क्रि-कैलमैक्स और पोषक सुपरस्टार अत्यधिक लाभकारी

इंदौर। वर्तमान समय में मध्य प्रदेश में सोयाबीन की फसल कई क्षेत्रों में फूल आने एवं कैनोपी (पत्तियों के फैलाव) के विकास की महत्वपूर्ण अवस्था में पहुंच चुकी है। इस अवस्था में फसल की बेहतर वृद्धि, पर्याप्त फूलों के विकास तथा संतुलित पौध वृद्धि के लिए उचित पोषण प्रबंधन बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है।

कृषि रसायन के क्रि-कैलमैक्स एवं पोषक सुपरस्टार का उपयोग इस अवस्था में किसानों के लिए उपयोगी विकल्प हो सकता है। कंपनी के अनुसार, सोयाबीन की फसल में क्रि-कैलमैक्स 500 मिलीलीटर प्रति एकड़ तथा पोषक सुपरस्टार 250 मिलीलीटर प्रति एकड़ की अनुशंसित मात्रा में उपयोग करने से फसल के पोषण एवं विकास को बेहतर तरीके से प्रोत्साहित किया जा सकता है। पोषक सुपरस्टार के उपयोग से पौधे की अनावश्यक वानस्पतिक वृद्धि को संतुलित रखने और पौधे को बेहतर एवं संतुलित वृद्धि की ओर ले जाने में मदद मिल सकती है। वहीं, क्रि-कैलमैक्स फसल में पोषण उपलब्धता एवं पौधे के समग्र विकास में सहयोग करता है। दोनों उत्पादों का उचित अवस्था में उपयोग करने से फसल में बेहतर कैनोपी डेवलपमेंट, संतुलित पौध वृद्धि एवं फूलों के विकास में सहायता मिलने की संभावना रहती है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी सोयाबीन की फसल की अवस्था, स्थानीय परिस्थितियों एवं कृषि विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार उत्पादों का उपयोग करें। कृषि रसायन द्वारा किसानों को बेहतर फसल प्रबंधन के लिए आधुनिक कृषि तकनीक एवं गुणवत्तापूर्ण कृषि उत्पाद उपलब्ध कराने की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

विजिलेंस पब्लिसिटी बिजनेस क्लास अवॉर्ड से सम्मानित

सम्मान पाने वाली मध्यभारत की पहली विज्ञापन एजेंसी बनी

इंदौर। इनोवेशन, क्रिएटिविटी और मेहनत जब साथ मिलते हैं तो हमेशा कीर्तिमान रचते हैं। प्रदेश सहित राष्ट्रीय से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक एडवरटाइजिंग सॉल्यूशन प्रदान करने वाली ख्यात विज्ञापन एजेंसी विजिलेंस पब्लिसिटी को 'मिर्ची बिजनेस क्लास अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। सम्पूर्ण मध्यभारत में यह सम्मान पाने वाली पहली एजेंसी है। प्रसिद्ध अभिनेत्री, टेलीविजन प्रेजेंटेटर और फिटनेस आइकॉन सुश्री मंदिरा बेदी द्वारा विजिलेंस पब्लिसिटी के डायरेक्टर श्री प्रमोद फरक्या को एक्सीलेंस इन नर्चरिंग ब्रांड्स की श्रेणी में यह पुरस्कार प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में अलग-अलग श्रेणियों में ऊंचा मुकाम प्राप्त करने वाले अचीवर्स को सम्मानित किया गया।

सुश्री मंदिरा बेदी से सम्मान ग्रहण करते हुए विजिलेंस पब्लिसिटी के श्री प्रमोद फरक्या (दायें) ।

वर्ष 1982 से मीडिया मैनेजमेंट एजेंसी के तौर पर अपने काम की शुरुआत करने वाली यह एजेंसी आज प्रिंट (न्यूज पेपर, मैगजीन आदि) टेलीविजन, रेडियो, वेब आदि विभिन्न माध्यमों से निरंतर अपने क्लाइंट्स को सर्वोत्तम समाधान उपलब्ध करवा रही है। साथ ही एक स्थापित मीडिया कंसल्टेंट और पीआर सर्विस प्रोवाइडर के रूप में भी इसने स्वयं को स्थापित किया है। अपने इनोवेटिव और आउट ऑफ द बॉक्स आइडियाज के लिए विजिलेंस ने सैकड़ों सम्मान तथा पुरस्कार प्राप्त किए हैं और विशेष पहचान बनाई है। यही कारण है कि पीढ़ियों से इसके क्लाइंट विश्वास के साथ जुड़े हुए हैं।

19 अगस्त को पहली बार जुटेंगे 200 पूर्व छात्र

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के 19वें स्थापना दिवस पर पहली बार बड़े स्तर पर एल्युमिनी मीट का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें विश्वविद्यालय के करीब 200 पूर्व विद्यार्थी एक मंच पर जुटेंगे। पूर्व छात्र वर्तमान विद्यार्थियों से अपने अनुभव साझा करने के साथ उन्हें शिक्षा, रोजगार, शोध और करियर की दिशा में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन देंगे। स्थापना दिवस समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ खेलकूद गतिविधियां भी आकर्षण का केंद्र रहेंगी।

समारोह की तैयारियों को लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविंद कुमार शुक्ला ने अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बैठक की। बैठक में 19 अगस्त को होने वाले विश्वविद्यालय के 19वें स्थापना दिवस समारोह की तैयारियों पर भी विस्तार से चर्चा हुई। एल्युमिनी मीट को लेकर विशेष रूप से तैयारियां की जा रही हैं। इस आयोजन में विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर चुके करीब 200 पूर्व विद्यार्थी शामिल होंगे।

समस्त कृषक बंधुओ को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

समस्त प्रकार के खाद, बीज एवं पेस्टीसाइड दवाईयों के अधिकृत विक्रेता
प्रो. - राजेन्द्र माहेश्वरी
मे. माहेश्वरी कृषि सेवा केन्द्र
कृषि उपज मण्डी के पास, बड़ोरा चौक, बैतूल
जिला - बैतूल (म.प्र.) मो. : 9425002346

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो. रितेश जैन
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, खाद, बीज, मल्चिंग, ड्रिप एवं स्प्रे पंप के अधिकृत विक्रेता
मे. जैन बीज भंडार
बिस्टान रोड, सब्जी मंडी के सामने, खरगौन (म.प्र.) मो. 9827800099

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, एवं उन्नत किस्म के बीज के अधिकृत विक्रेता
मे. फ्रेन्ड्स एग्रीकल्चर एंड डेव्हलपमेंट
प्रो. दिनेश ठाकुर गांधी चौक, किसान मोहल्ला, सिवनी-मालवा
जिला-नर्मदापुरम (म.प्र.) मो. : 9575853039

सदस्यता फार्म
कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824
मो. : 9425013075, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम..
संस्था का नाम..
पूरा पता..
ग्राम..................पोस्ट..................तहसील..................
जिला..................राज्य..................पिन कोड
दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

वार्षिक	: 700/-	द्विवार्षिक	: 1300/-
त्रिवार्षिक	: 1900/-	पंचवर्षीय	: 3100/-
दसवर्षीय	: 6100/-	आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र " कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).................. (शब्दों में)..................
बैंक का नाम.................. ड्राफ्ट चेक क्रमांक..................
दिनांक.................. संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।
स्थान.................. प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य
दिनांक.................. एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

सोयाबीन की बंपर पैदावार
जोड़ी नंबर 1 के साथ
KRISHAJ
जड़ों से जुड़ी... एक सोच बड़ी
पौषक सुपरस्टार
• हर हिस्से मे बेहतर बढ़वार, मजबूत कैनोपी
• कम फूल झड़ना
• स्वस्थ, गहरी हरी पत्तियाँ
• तनाव की स्थिति में भी बेहतर प्रदर्शन
PATENTED
PAUSHAK SUPER STAR
KRI-CalMax
KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.
क्रि-कैलमैक्स
• अधिक फूल बहार
• ज्यादा फलियाँ
• वजनदार दाने
• 18–20% तक अधिक उपज
FCO APPROVED
स्कैन करें और हमारे अन्य उत्पादों को देखें।
50 Cultivating Prosperity
कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड
1115, हेमकुंट टावर, 98, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली , 110019 (भारत)
वेबसाइट: www.krepl.in । टोल फ्री नंबर: 1800 572 5065
*अधिक जानकारी के लिए टोल फ्री नंबर 1800-572-5065 पर संपर्क करें
Follow us on: @krishirasayan73

अन्नदाता का साथ किसान का विकास
अन्नदाता
जिंकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)
सल्फर और जिंक की ताकत
ज्यादा उपज और कम लागत
अन्नदाता जिबो
अन्नदाता जिबो का वादा
मिट्टी जानदार और उपज भी ज्यादा
OSTWAL
जिंक 0.5%
नाइट्रोजन 20%
फास्फोरस 20%
सल्फर 13%
फास्फोरस 16%
बोरोन 0.2%
जिंक 0.5%
सल्फर 11%
कैल्शियम 19%
अन्नदाता जिबो
ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज
रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-O-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)
उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा) । कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा – सागर)

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार ईंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रेक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.
Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com